per hour from 16% to 8% under sub-section 2 of section 38 of the Central Excise Act, 1944. [Placed in Library. *See* No. L.T. 5057A /06]

2. Notification No.114/2006- Customs, dated the 28th November, 2006, seeking to reduce basic customs duty on Heat set web offset rotary printing machines with a minimum speed of 70,000 copies per hour from 12.5% to 5% under section 159 of the Customs Act, 1962. [Placed in Library. *See* No. L.T. 5057/06]

SHORT DURATION DISCUSSION

Internal Security Scenario in the country — *Contd.*

श्री राशिद अल्वी : सर, आडवाणी जी ने कहा था, मैं कोट करता हूं, मैं कोट करता हूं, "The number of violent incidences in the State is on the decline. There have been a large number of arrests and recovery of weapons and explosives. An action plan has been framed." सर, आज कौन सी नई बात हो गई ? अभी अरुण जेटली साहब चले गए, कल उन्होंने कहा कि यूपीए की सरकार के अंदर यह देश महफूज़ नहीं है। हर एक बात पर कहते हो तुम कि तू क्या है?

"हर एक बात पर कहते हो तुम कि तू क्या है,

तुम्हीं बताओ ये अंदाज़-ए-गुफ्तगू क्या है।"

हमारी सरकार के अंदर हम ४ हजार से एक हजार पर ले आए, तो आप कह रहे हो कि यूपीए सरकार के अंदर देश महफूज नहीं है। आपकी सरकार के अंदर ५ आदमी कम मारे गए, तो तुम कह रहे हो कि सारी सिचुएशन कंट्रोल के अंदर है। सर, कश्मीर के अंदर क्या-क्या किया? मुजफ्फराबाद-श्रीनगर के अंदर बस सर्विस चली और ऐसा नहीं है कि सरकार आंखें बंद करके बस सर्विस चला रही है, ३१७ लोग हिन्दुस्तान से पाकिस्तान गए। सरकार की नजर है कि कितने लोग वापिस आए, २६५ लोग वापिस आए। कितने पाकिस्तानी आए, ३६५ पाकिस्तानी आए और ३२४ को वापिस भेज दिया गया। सरकार की इस पर भी नजर है। अमृतसर-लाहौर की बस चल रही है। अमृतसर-ननकाना साहिब की बस चल रही है, राजस्थान से ट्रेन चल रही है और इंटरनेशनल बार्डर पर १७७ किलोमीटर, जो सरकार ने १८० किलोमीटर सैंक्शन किया था, उस पर फैंसिंग हो गई है, १८० किलोमीटर में से १७७ किलोमीटर पर फैंसिंग हो गई है, करीब-करीब मुकम्मल हो गई है।

फ्लड लाइटिंग ८७ किलोमीटर पर लगा दी गई है। इसके अलावा जो सबसे बड़ा अचीवमेंट मैं सरकार का मानता हूं और वह बड़ा अचीवमेंट यह है कि अरबन सिविक बॉडीज़ के इलेक्शन कश्मीर के अंदर हुए। उस इलेक्शन के अंदर ६३ अरबन सिविक बॉडीज में जो १२ जिलों के अंदर हुए १७ फरवरी को, उसमें ४८ परसेंट वोटर्स ने कश्मीर के अंदर पार्टिसिपेट किया, क्या यह मामूली बात है? क्या इसके बाद भी आप कहेंगे कि यूपीए की सरकार के अंदर देश महफूज़ नहीं है। कश्मीर जो सबसे ज्यादा सेंसेटिव इलाका है, वहां पर ४८ परसेंट लोगों ने इलेक्शन के अंदर पार्टिसिपेट किया। इससे भी एक कदम आगे, मैं आपको बताऊं ३० परसेंट विमैन्स का रिजर्वेशन, ३०८४ कैंडिडेट्स में ९३४ कश्मीरी औरतों ने इलेक्शन के अंदर पार्टिसिपेट किया। इससे ज्यादा और क्या हो सकता है, शायद यह कश्मीर के इतिहास में पहली बार हुआ है। अमरनाथ यात्रा पर ४ लाख लोग दर्शन करने के लिए गए। पिछले साल साढ़े तीन लाख टूरिस्ट कश्मीर के अंदर गए, जहां पर लोग नहीं जाते थे। ये सारी कश्मीर की आज की सिचुएशन है। इसके बावजूद भी यह कहा जाए कि कश्मीर के अंदर हालात खराब हैं। मैं यह कह सकता हूं कि कश्मीर के पूरे हालात कंट्रोल में शायद न हों, लेकिन जो इम्प्रूवमेंट है, वह हम सब के सामने है।

इसके अलावा सरकार उन माइग्रेन्ट फैमिलीज़ का जो कश्मीर से निकलकर आ रही हैं, उनकी पूरी तादाद ५५४७६ है, जिसमें से जम्मू के अंदर ३४ हजार, दिल्ली के अंदर १९ हजार और दूसरी स्टेट्स के अंदर २०५० है, जिनकी बार-बार दुहाई दी जाती है कि कश्मीर के अंदर से लोग माइग्रेट कर गए, मॉइनारिटीज़ के लोग माइग्रेट कर गए, सरकार उनका ध्यान नहीं दे रही है। हर फैमिली को जम्मू के अंदर राशन के अलावा ३००० रुपये पर फैमिली दिया जाता है। दिल्ली के अंदर ३२०० रुपये हर फैमिली को दिए जाते हैं और इसके साथ-साथ राशन भी दिया जाता है। सेंट्रल गवर्नमेंट इसके लिए पैसा उन स्टेट्स को देती है। इसके अलावा २४ हजार करोड़ रुपये का प्राइम मिनिस्टर ने अनाउंसमेंट वहां के लिए किया, यह कोई छोटी रकम नहीं है। सर, अगली बात यहां नार्थ-ईरट की कही गई। नॉर्थ-ईस्ट के संबंध में जो डाटा यहां पर दिए गए हैं, वह डाटा आप सबके पास हैं, मैं फिर से उनको देकर हाउस का वक्त खराब नहीं करना चाहता। लेकिन नॉर्थ-ईस्ट के अंदर भी २००५ के अंदर और २००६ के अंदर कम से कम २५ परसेंट कम इंसीडेंट्स हुए। असम के अंदर सिचुएशन सुधरी है। मणिपुर के अंदर हालात बेहतर हुए हैं और वहां पर आने वाले इलैक्शन के अंदर, मुझे उम्मीद है कि स्मूथली इलैक्शंस होंगे। नागालैंड के अंदर इंसीडेंट्स थोड़े-बहुत बढ़े हैं। त्रिपुरा के अंदर हालात ठीक हुए हैं, मेघालय के अंदर हालात ठीक हुए हैं। मैं सरकार से इतना जरूर कहूंगा कि नागालैंड के अंदर जो सिचुएशन है, जो आम आदमी से टैक्सेज़ वगैरह लिए जाते हैं, उस पर सरकार की तवज्जह होनी चाहिए। नेक्सलाइट मूवमेंट के बारे में यहां पर तफसील से बात हुई है। नेक्सलाइट मूवमेंट के संबंध में एक सच्चाई मैं आपको बताना चाहता हूं। कल मेरे दोस्त ने भी यह बात कही थी कि छत्तीसगढ़ के अंदर ४९ परसेंट के करीब इंसीडेंट्स, टोटल इंसीडेंट्स जो पूरे देश के अंदर हुए, उसके ४९ परसेंट छत्तीसगढ़ के अंदर हुए हैं। लेकिन इससे भी अधिक मज़े की बात मैं हाउस को बताना चाहता हूं - मैं किसी पर इल्ज़ाम नहीं लगा रहा, लेकिन यह एक

ऐसी सच्चाई है, जिसे न मैं बदल सकता हूं, न आप बदल सकते हैं - छत्तीसगढ़ और झारखंड के अंदर जो नक्सलवादियों के इंसीडेंट्स हुए हैं, अगर उन दोनों को जोड़ दिया जाए तो वह करीब-करीब ८६६ होते हैं और पूरे हिन्दुस्तान में कुल १२०० इंसीडेंट्स हुए। इस प्रकार १२०० इंसीडेंट्स में से ८६६ इंसीडेंट्स अकेले झारखंड और छत्तीसगढ़ के अंदर हुए हैं जो टोटल इंसीडेंट्स के ७० फीसदी होते हैं। मैं किसी पर अंगुली नहीं उठाना चाहता, लेकिन इतना जरूर कहना चाहता हूं कि इस मुद्दे को उठाने से पहले यह जरूर सोचना चाहिए कि कौन लोग जिम्मेदार हैं? जितनी स्टेट्स नेक्सलाइट से प्रभावित हैं, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उड़ीसा, बिहार और उत्तर प्रदेश - वहां कहीं कांग्रेस की सरकार नहीं है, वहां पर दूसरी पार्टियों की सरकारें हैं। सेंट्रल गवर्नमेंट पर जिम्मेदारी कैसे लगाएंगे? सेंट्रल गवर्नमेंट उन मामलात् के अंदर क्या कर सकती है, इस पर भी हमें सोचना पड़ेगा। सर, एनडीए की सरकार आयी थी। पूरे हिन्दुस्तान के अंदर तब करीब-करीब ५५ जिलों के अंदर नेक्सलाइट मूवमेंट था। जब २००४ में वह सरकार गयी, तब १५६ जिलों के अंदर नेक्सलाइट मूवमेंट था। जब वह सरकार आयी थी तब ५५ जिलों में नेक्सलाइट मूवमेंट चल रहा था और जब गयी थी तब १५६ जिलों में यह मूवमेंट चल रहा था। सर, नेक्सलाइट मूवमेंट के संबंध में मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं। नेक्सलाइट मूवमेंट इस देश के अंदर सन् ६७ से शुरू हुआ और पेट में लगी हुई भूख से वह शुरू हुआ। यह सही है, मैं किसी पर इल्ज़ाम नहीं लगा रहा लेकिन सरकार को इस पर सोचना पड़ेगा, चाहे वह किसी भी पार्टी की सरकार हो, कि नेक्सलाइट मूवमेंट बढ़ेगा। दुनिया का कोई भी कानून हो, चाहे हिन्दुस्तान का आईपीसी हो या दुनिया का कोई भी कानून हो, उसका दारोमदार पनिशमेंट पर होता है। जब इस दुनिया के अंदर ह्यूमैन बम बनने लगे तो एक बड़ा खतरा हो जाता है। इस पर हमें सोचना पड़ेगा। आदमी अपनी ज़िंदगी देने के लिए क्यों तैयार है? आदमी मरने के लिए क्यों तैयार है? मैं आपसे कहना चाहूंगा, यहां पर बार-बार आप गुरू अफज़ल का मसला उठाते हैं कि उसको फांसी देनी चाहिए। बगैर उसके इंटरनल सिक्योरिटी पर बहस पूरी नहीं होती है। भगवान कृष्ण ने एक बार अर्जुन को समझाया था और उन्होंने कहा था कि अर्जुन, निष्ठा दो तरह की होती है। एक निष्ठा होती है, देश के लिए, एक निष्ठा होती है धर्म के लिए, एक निष्ठा होती है, सच्चाई और ईमानदारी के लिए और दूसरी निष्ठा होती है, राजा के लिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि राजा की निष्ठा देश के लिए बगावत बन जाती है और कभी-कभी ऐसा होता है कि देश की निष्ठा राजा के लिए बगावत बन जाती है। अगर अपनी पार्टी के लिए आप यहां पर बोलना चाहते हैं तो मुमकिन है कि देश के लिए वह बगावत बन जाए, देश के लिए बेवफाई बन जाए—बहुत मुमकिन है। देश के लिए सोचना पड़ेगा, राजनैतिक दल देश से छोटे हैं, राजनैतिक दल देश से बड़े नहीं है। सर, अफज़ल गुरु की बात बार-बार यहां कही गई। मैं

बहुत अदब से पूछना चाहता हूं कि एन.डी.ए. की सरकार थी, मौलाना अज़हर छः साल तक जेल के अंदर बंद रहे, क्या उन पर मुकदमा चला था? क्या सरकार ने कोशिश की थी कि उनको... *(समय की घंटी)*... सर, अभी तो मैंने शुरू ही किया है।

श्री उपसभापति : आप १८ मिनट बोल चुके हैं। ...(व्यवधान)...

श्री विजय कुमार रूपाणी (गुजरात): वहां मुकदमा चल रहा है, यहां तो जजमेंट आ रहे हैं।

श्री राशिद अल्वी : मुझे बोलने दीजिए। आप भी बोलेंगे, आपको टाइम मिलेगा, मैं आपकी बात से इंकार नहीं कर रहा हूं। मौलाना अज़हर जेल के अंदर रहे, छः साल तक लगातार जेल के अंदर रहे। अदालत की शक्ल उस आदमी ने नहीं देखी, क्यों उसके ऊपर मुकदमा नहीं चला? क्यों एन.डी.ए. की सरकार, जो कहती है कि हम आतंकवादियों के सबसे ज्यादा खिलाफ हैं, क्यों उसको मुकदमे में फांसी की सज़ा नहीं दी? कांग्रेस पार्टी ने कभी यह नहीं कहा कि अफजल गुरु को फांसी नहीं होनी चाहिए। कांग्रेस के spokesperson ने नहीं कहा, सरकार ने नहीं कहा, होम मिनिस्टर ने नहीं कहा। कल बार-बार यह कहा जा रहा था कि कांग्रेस ...(व्यवधान)...

श्री विजय कुमार रूपाणी : कांग्रेस के मुख्य मंत्री ने कहा कि उसको फांसी नहीं होनी चाहिए। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : आप उनको बोलने दीजिए। ...(व्यवधान)... ठीक है, वे बोलते हैं, तो आपको बीच में इंटरवीन करने की जरूरत नहीं है। ...(व्यवधान)... नहीं... नहीं, आप बैठिए। ...(व्यवधान)...

श्री विजय कुमार रूपाणी : कांग्रेस ने साफ किया है। ...(व्यवधान)...

श्री बी.के. हरिप्रसाद (कर्णाटक): क्या साफ किया है? ...(व्यवधान)...

श्री राशिद अल्वी : बोलने दीजिए, शोर मचाने से कोई फर्क नहीं पड़ता है। आप अपना आर्ग्युमेंट रखिए। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : बिलकुल सही कहा आपने।

श्री राशिद अल्वी : एक बहुत गलतफहमी है। हाऊस के अंदर बहुत सारे दोस्तों को एक गलतफहमी है कि शायद शोर मचाने से कुछ फर्क पड़ जाता है। आर्ग्युमेंट दीजिए। ...(व्यवधान)... सुनिए, खामोशी के साथ बात सुनिए और उसके बाद जवाब दीजिए, तब देश

के लोगों को पता चलेगा कि कौन सच बोल रहा है और कौन गलत बोल रहा है। आप बहस कीजिए, शोर मचाने का काम नहीं कीजिए।

मैं आपसे अर्ज़ कर रहा था कि कांग्रेस पार्टी ने बिल्कुल नहीं कहा कि अफज़ल गुरु को फांसी न दी जाए। क्यों न फांसी दी जाए? सुप्रीम कोर्ट का फैसला है, कौन रोक पाएगा उस फैसले को? एक समझदार आदमी यह नहीं कह सकता कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले को इंप्लिमेंट न किया जाए। ऐसा कैसे मुमकिन है? लेकिन अगर उसने mercy की appeal की है, मैं भी कहना चाहता हूं, हर वह आदमी जो यह कह रहा है, चाहे वह कोई भी कह रहा हो, कि इसको माफ कर दिया जाए या इसको फांसी दे दी जाए, यह भी गैर-कानूनी बात है। आप दबाव नहीं बना सकते। ईमानदारी के साथ प्रेज़ीडेंट साहब को फैसला करने दीजिए, वे क्या फैसला करेंगे, यह वे जानें। हम इस बात को नहीं कह सकते कि किसको फांसी दी जाए और किसको फांसी न दी जाए। अपने गिरेबानों में झांककर हमें देखना चाहिए, हम इस मौलाना अज़हर को, जो बुनियाद है इस टेररिज्म की, जिसने इस देश को तबाह करने का काम किया है, उसको हम हवाई जहाज़ में बैठाकर काबुल छोड़ आए? कौन है इस बात के लिए जिम्मेदार, कभी इसे सोचा? आज पूरे देश के अंदर आप अफजल गुरु की बात कहकर देश के माहौल को तबाह कर रहे हैं। मैं कहना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी की तरफ आप इस तरह का इलज़ाम नहीं लगा सकते। सन् ४७ को जब यह देश आज़ाद हुआ था, आज साठ साल हो गए आज़ादी के और इन साठ सालों में वे तमाम लोग, जो फिरकापरस्ती और सम्प्रदायवाद का फायदा उठाकर राजनीति करना चाहते हैं, मैं उन्हें इस देश का दोस्त नहीं मानता हूं। अगर सन् ४७ को कांग्रेस यह फैसला कर लेती कि हिंदुस्तान के अंदर हिंदू राष्ट्र बनेगा, अगर कांग्रेस वह ज़बान बोलती जो आप बोलते, तो शायद भारतीय जनता पार्टी इस देश के अंदर पनप नहीं सकती थी, लेकिन कांग्रेस ने सन् १५ अगस्त, १९४७ को फैसला किया। १४ अगस्त को पाकिस्तान बन गया और पाकिस्तान ने कहा था कि हम इस्लामिक कंट्री हैं, इसके बावजूद कि पाकिस्तान ने कहा कि हम इस्लामिक कंट्री हैं, इस देश के उस वक्त के नेताओं ने कहा कि यह एक सेक्युलर कंट्री है। अगर १५ अगस्त, १९४७ को कांग्रेस कह देती, सरकार कह देती, तो इस देश के अंदर कोई फर्क पड़ने वाला नहीं था। कांग्रेस ने कहा कि ...(व्यवधान)...

SHRI N. JOTHI (Tamil Nadu): It is not because of Congress. It is because of public. Don't take credit for Congress Party alone ...*(Interruptions)*...

श्री रुद्रनारायण पाणि : आपने बंटवारे को माना नहीं ?

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Let him finish Mr.Jothi....आप बैठिए....देखिए....मिस्टर पाणि, यह सही नहीं है। आप क्वेश्चन ऑवर में बोल चुके हैं। **...(व्यवधान)...**

श्री विजय कुमार रूपाणी (उड़ीसा) : बंटवारा आपने किया है।

श्री उपसभापति : आप खामोश बैठिए....यहां बंटवारे का सवाल नहीं हो रहा है, बैठिए। **...(व्यवधान)...**

SHRI N. JOTHI : *

SHRI RUDRA NARAYAN PANY: *

SHRI B.K. HARIPRASAD: *

श्री रुद्रनारायण पाणि : *

श्री उपसभापति : आप बैठिए। देखिए**...(व्यवधान)...** मिस्टर पाणि बैठिए। **...(व्यवधान)...** मिस्टर पाणि, यह सही नहीं है। **...(व्यवधान)...**आप क्वेश्चन आवर में बोल दीजिए।**...(व्यवधान)...**

श्री रुद्रनारायण पाणि : *

श्री उपसभापति : अब आप आप खामोश बैठिए**...(व्यवधान)...** यहां बंटवारे का सवाल नहीं है, आप बैठिए। **...(व्यवधान)...**

श्री रुद्रनारायण पाणि : *

श्री उपसभापति : आप बैठिए। Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*...

SHRI RUDRA NARAYAN PANY: *

श्री उपसभापति : मिस्टर पाणि बैठिए। **...(व्यवधान)...**आप बिना इजाजत के बोल रहे हैं। **...(व्यवधान)...** उसके ऊपर अलग बात कीजिए। **...(व्यवधान)...** आप बैठिए। **...(व्यवधान)...** Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... मिस्टर पाणि आप बैठिए। **...(व्यवधान)...** अल्वी साहब आप बोलिए।

श्री अबू आसिम आज़मी : *

श्री उपसभापति : ये क्या बहस कर रहे हैं? आप बैठिए। Unnecessary things will not go on record. Whoever Member just gets up and speaks without the permission of the Chair will not go on record. ...*(Interruptions)*...

श्री एस. एस. अहलुवालिया (झारखंड): ये १९४७ की बात कर रहे हैं.। **...(व्यवधान)...**

---

*Not recorded.

श्री उपसभापति : अब ४७ कहां है? ...(व्यवधान)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : अब तो २००६ की बात हो रही है, इसलिए २००६ की बात करो। ...(व्यवधान)...

SHRI N. JOTHI: It is not correct, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I can't put words in his mouth. ...*(Interruptions)*...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : ये २००६ की बात कर रहे हैं।

श्री उपसभापति : अल्वी साहब, आपको बोलते हुए २५ मिनट हो गए हैं। आप वक्त का ख्याल रखें। आप अपनी पार्टी की तरफ से फर्स्ट स्पीकर हो जाइए, तब बोलिए, हमें कोई ऐतराज नहीं है।

श्री राशिद अल्वी : सर, मैं १० मिनट में अपनी बात खत्म कर रहा हूं। मैं यहां पार्टिशन पर बहस नहीं कर रहा हूं, किसी दिन बहस होगी तो उस पर भी बहस कर लूंगा, लेकिन मैं सिर्फ यह कहना चाहता था कि यह देश एक सैक्युलर देश है। कम्युनल राइट्स से कोई घबराहट नहीं होती है, जैसा कि अबू आज़मी साहब कह रहे हैं, कम्युनल राइट कोई बड़ी प्रोब्लम नहीं है। अगर हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ते हैं, दुनिया का कोई कोना ऐसा नहीं है, जहां पर आपस में लोग लड़ते न हों। अमेरिका के अंदर काले और गोरे लड़ते हैं, पाकिस्तान के अंदर रिफ्यूजीज और नॉन रिफ्यूजीज़ लड़ते हैं, लेकिन यह खतरनाक कब हो जाता है, यह खतरनाक तब हो जाता है, जब सियायतदान हिन्दू और मुसलमान बन जाता है। खतरनाक तब हो जाता है जब सरकार हिन्दू और मुसलमान बन जाती है। ...(व्यवधान)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : सर, काले और गोरे रिकार्ड से निकलवा दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : क्या है काले और गोरे? ...(व्यवधान)...

श्री राशिद अल्वी : मैं अमेरिका की बात कर रहा हूं। ...(व्यवधान)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : चाहे कहीं का भी हो., हम अपने को युनाइटेड नेशन्स के कर्ता धर्ता मानते हैं। काले और गोरे की क्या बात कर रहे हैं? ...(व्यवधान)...

श्रीमती वृंदा कारत (पश्चिमी बंगाल): काले और गोरे की बात है, ...(व्यवधान)... What is wrong? ...(व्यवधान)... यह racism क्या है? ...(व्यवधान)...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : ये racism तो है ही, आप यहां racism की बात क्यों उठाते हैं? ...(व्यवधान)... racism की बात क्यों करते हैं? ...(व्यवधान)... आप दूसरी तरह बोलिए, लफ्ज बने हुए हैं।...(व्यवधान)...

श्री राशिद अल्वी : यदि ये अन-पार्लियामेंटेरी हैं तो निकाल दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : मैं रिकार्ड देखूंगा, यदि यह अन-पार्लियामेंटेरी हुआ तो निकालूंगा, नहीं तो रखूंगा। आप बोलिए।

श्री राशिद अल्वी : मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं है, लेकिन ये लोग यह तय कर बैठते हैं कि इस तरीके के मुद्दे उठाने हैं कि कांग्रेस के लोगों को बोलने नहीं देना है। सर, बहरहाल मैं आपसे आखिरी बात और कहना चाहता हूं और यह भी कहना चाहता हूं कि इस देश के अंदर इस देश में तलवार की धार सिर्फ इंसानों के जिस्मों को काट सकती है और इंसानों के जिस्मों पर लगे हुए ज़ख्मों को अच्छा डॉक्टर ठीक कर सकता है, उसका ऑपरेशन कर सकता है, लेकिन ज़ुबान से निकले हुए या उगलने वाले ज़हर से जो दिल ज़ख्मी होते हैं, उनको दुनिया की कोई भी ताक़त ठीक नहीं कर सकती। इसे भारतीय जनता पार्टी के लोगों को सोचना पड़ेगा। मैं अपनी आखिरी बात कहूंगा कि पोटा की बात कहे बगैर आपकी बात पूरी नहीं होती है, लेकिन पोटा को सरकार ने खत्म किया और रिव्यु कमेटी में है-यह मैं आपको होम मिनिस्ट्री की एन्युअल रिपोर्ट के मुताबिक बता रहा हूं, अभी यहां पर श्री अरुण जेटली जी नहीं हैं, इस मुल्क के अन्दर पोटा के २६३ केसिज़ हुए, जिसमें १५२९ लोग शामिल थे, इन्वॉल्व थे और रिव्यू कमेटी ने १००६ लोगों को यह कह दिया कि उनके खिलाफ कोई *prima facie* case नहीं बनता। यह है पोटा, जिस पोटा की आप बार-बार बात करते हैं। सरकार ने एक ज़माने के अंदर टाडा लगाया था, इस टाडा के मुताबिक २.३ परसेंट लोगों को पनिशमैंट मिली। हज़ारों-लाखों लोग, दस-दस साल तक जेल के अंदर रहे थे, जिनके खानदान तबाह हो गए। जिनके घर तबाह हो गए, उनके बारे में कभी सोचा है आपने...(व्यवधान)... बार-बार...(व्यवधान)... की आवाज बुलंद करने से पहले १५२९ में से १००६ लोगों को रिव्यू कमेटी ने बरी कर दिया। "टाडा" राजीव गांधी जी को नहीं बचा पाया, पंजाब के चीफ मिनिस्टर को नहीं बचा पाया, "पोटा" पार्लियामेंट को नहीं बचा पाया। अटल बिहारी जी का एक दिन पहले मुम्बई के अंदर का स्टेटमेंट मुझे याद है कि पार्लियामेंट पर कभी भी हमला हो सकता है। एक दिन पहले बयान दिया था प्रधानमंत्री जी ने, इसके बावजूद हम पार्लियामेंट को नहीं बचा पाए। "पोटा" कानून उस वक्त मौजूद था। सर,

मैं कहना चाहूंगा कि इंटरनल सिक्योरिटी के मामले में क्रिमिनल पोलिटिशियन्स के जो रिश्ते हैं, इन पर भी सरकार को गौर करना पड़ेगा। सरकार को मालूम होगा, वोहरा कमेटी की रिपोर्ट, जिसमें १९९५ में डायरेक्टर आई.बी. ने कहा था, "Identification of the nexus between the criminals, mafias and anti-national elements on the one hand and bureaucrats, politicians and other individuals on the other." This is the Report of the Vohra Committee. ये सारी बुनियादें हैं। ये सारी पोलिटिशियन्स, ब्यूरोक्रेट्स ...(व्यवधान)...

DR. FAROOQ ABDULLAH (Jammu and Kashmir): It can be any side. It can be yours or any side.

श्री राशिद अल्वी : मैं यह नहीं कह रहा हूं और इसके अंदर खास तौर से, यू.पी. की मैं अलहदा चर्चा नहीं करना चाहता। मेरे दोस्त लोग * शुरू कर देंगे।...(व्यवधान)...सर, मेरी राय है, क्रिमिनल पोलिटिशियन्स के लिए मैं एक राय जरूर देना चाहूंगा। मैं प्राइम मिनिस्टर, होम मिनिस्टर साहब से कहूंगा कि मेरी बात को तवज्जह दें। प्राइम मिनिस्टर, लीडर ऑफ दि अपोजिशन, स्पीकर इन तीनों की कमेटी बननी चाहिए। और कोई भी आदमी, इलेक्शन कमीशन को भी आप उसका मैम्बर बना सकते हैं। कोई भी ऐसा आदमी, जिसकी बैकग्राउण्ड क्रिमिनल - सर, मैं ऐसे लोगों को जानता हूं, मैं पोलिटिशियन्स का नाम नहीं लेना चाहता, जिन पर अस्सी, अस्सी कत्ल के मुकदमे हैं और हर मुकदमे में वे बरी हैं। मैं यहां पार्टी पोलिटिक्स नहीं कर रहा हूं। मैं कहना चाहता हूं कि आप ऐसी एक कमेटी बना दीजिए जो यह फैसला करे कि ये लोग पार्लियामेंट और असेम्बली का इलेक्शन कंटेस्ट नहीं कर सकते। मैं जानता हूं कि मेरी यह आवाज आज ज्यादा बुलंद नहीं हो पाएगी, लेकिन मैं यह रिकार्ड पर लाना चाहता हूं कि इस देश से ...(व्यवधान)...

श्री विजय कुमार त्रपाणी : तुम्हारे दागी मिनिस्ट्री में हैं...(व्यवधान)...

श्री रुद्रनारायण पाणि : उपसभापति जी...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : जरा काबू रखिए...(व्यवधान)...यह क्या है...(व्यवधान)...उनको बात करने दीजिए ...(व्यवधान)... प्लीज आप बैठिए...(व्यवधान)... मि. पाणि ...(व्यवधान)... आप बैठिए...(व्यवधान)... उनको बोलने दीजिए...(व्यवधान)... जब तुम्हारा मौका आए तब बोलो...(व्यवधान)...

श्री रुद्रनारायण पाणि : आपका नाम ...(व्यवधान)...आना पड़ेगा. ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति : मि. पाणि ...(व्यवधान)...आप मत कीजिए...(व्यवधान)... Don't interrupt like this. Nothing will go on record.

श्री रुद्रनारायण पाणि : *

*Enpunged as ordered by the Chair.

श्री विजय कुमार रूपाणी : *

श्री उपसभापति : पाणि जी...(**व्यवधान**)... वह नहीं जाएगा ...(**व्यवधान**)...

श्री राशिद अल्वी : सर, आखिरी बात कहूंगा। फारूख अब्दुल्ला साहब यहां बैठे हैं। सरकार पर यह भी इल्ज़ाम लगा कि कश्मीर के अंदर सेल्फ रूल और ऑटोनोमी की बात की और सेंट्रल गवर्नमेंट खामोश बैठी रही। ऑटोनोमी की बात पहली बार नहीं हुई। एन.डी.ए. की सरकार थी, फारूख अब्दुल्ला साहब चीफ मिनिस्टर थे और फारूख अब्दुल्ला साहब की पार्टी का अध्यक्ष एन.डी.ए. की सरकार के अंदर मंत्री था, जो इत्तेफाक से फारूख अब्दुल्ला साहब का बेटा भी होता है। उस वक्त फारूख अब्दुल्ला साहब ने ही ऑटोनॉमी की बात उठाई थी और एन.डी.ए. की सरकार ने अपने कानों के अंदर रुई डाल ली। एक बार भी नहीं कहा...(**व्यवधान**)...

DR. FAROOQ ABDULLAH: Sir, I am on a point of order. यह मेरी सरकार के वक्त में ही नहीं था, यह कांग्रेस सरकार में भी था, ...(**व्यवधान**)... जस्ट ए मिनट प्लीज, जब नरसिम्हा राव जी वजीरे आजम थे ...(**व्यवधान**)... उन्होंने खुद कहा ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य : सर, ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : आप बैठिए...(**व्यवधान**)... उन्होंने अपील की...(**व्यवधान**)... नहीं तो वे...(**व्यवधान**)...

डा. फारुक अब्दुल्ला : उन्होंने हाउस में कहा, "As far as autonomy is concerned, sky is the limit. हम इंडिपेंडेंस नहीं देंगे। But sky is the limit." उस वक्त हुआ।

श्री राशिद अल्वी : मैं कोई इलज़ाम नहीं लगा रहा हूं, मैं सिर्फ इतनी बात कह रहा हूं कि ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : राशिद जी, आपसे पहले स्पीकर्स ने जितना समय लिया, उससे ज्यादा समय आपने ले लिया है।

श्री राशिद अल्वी : मैं खत्म कर रहा हूं।

श्री उपसभापति : देखिए, वक्त का लिहाज़ रखना चाहिए।

श्री राशिद अल्वी : मैं खत्म कर रहा हूं। मैं सिर्फ इतनी बात कहना चाहता हूं कि जिस autonomy के बारे में आज चर्चा हो रही है, जब NDA की सरकार थी, NDA की सरकार क्यों खामोश रही? उस सरकार के अंदर उस पार्टी का मंत्री मौजूद था, जिस पार्टी के

मुख्यमंत्री ने autonomy की बात कही थी। आज यह मुद्दा इस पार्लियामेंट के अंदर क्यों उठाया जा रहा है? मैं अपनी बात खत्म करता हूं इस दरख्वास्त के साथ कि—

"आओ, हम सब मिलकर सोचें,

बहस करें मसाइल पर।

मुझे यकीन है सब बैठेंगे,

हल निकलेगा, हल निकलेगा।"

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. N. Jothi. Your party has eight minutes. I am just reminding you.

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश) : सर, इनको हमारा टाइम दे दीजिए।

श्री उपसभापति : आपका टाइम तो हो गया।

SHRI N. JOTHI : Hon. Deputy Chairman, Sir, knowingly or unknowingly, advertently or inadvertently, they have published this Status Paper on Internal Security in yellow colour. Yellow colour in the court parlance denotes insolvency, bankruptcy and pauperism. *...(Interruptions)...* Yellow colour indicates pauperism. This Status Paper in yellow colour indicates pauperism of the entire security maintained by this Government. This yellow colour is the indication of pauperism and insolvency in maintaining internal security by this Government. So, they themselves have admitted that it is under insolvency. *...(Interruptions)...*

Sir, law and order and public order are the root cause for internal security. If you maintain proper public order and proper law and order, the place will be a calm place. You are not maintaining either of these two. What is the situation of internal security as on today, after this Government has taken over in 2004 with the able support of the comrades? Take the Jehanabad jail break. It is not ordinary mass annihilations. They are all acts of cowardice because people who are not in a position to defend themselves, there is no point in marching on them. Look at the manner in which the terrorists are going ahead of you. They are breaking the well-guarded jails.

3.00 P.M.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI SHIVRAJ V. PATIL): Who protects the jails, the State Government or the Union Government?

SHRI N. JOTHI: Sir, the Union Government's rule was in force there. Your Governor's regime was there in Jehanabad. When the jail break took place in Jehanabad, President's rule was there. Virtually you were ruling. Mr. Bhuta Singh was the Governor.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: The jails are protected by the State police. They have to protect the jails. ...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: It was done by the Governor representing the Central Government.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: This is the first item in the State List of the Seventh Schedule.

SHRI N. JOTHI: When a State is under President's rule, they are protecting it. They must own it. The first problem with this Government is that whenever any credit comes, they go and grab it; and whenever a problem comes, they disown it. No, we are not for this. Who was Mr. Bhuta Singh? He was your right hand man, whose shadow was your shadow; his caricature was your caricature; and his ruling was your ruling and you say the State Government. Since the jail was broken, you say, "I am not responsible; Mr. Bhuta Singh is responsible". Who is Mr. Bhuta Singh? Your elder brother!

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jothi, please.

SHRI N. JOTHI: Sir, I am using all parliamentary words, not unparliamentary words.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I am not saying that they are unparliamentary words.

SHRI N. JOTHI: Sir, the term "elder brother" is not unparliamentary. You say "father of the nation". I say "elder brother". So, what? I may later say younger son. Had Ammaji been there, no fellow would wag his tail. It will be cut. Shortly, she will come here. Don't worry. Shortly the day will come. Don't worry. Jehanabad is to your credit. Please own it. Don't disown your baby. It is your baby. The next one is Giridih in Jharkhand. I may be wrong in the usage of the word. What has happened there? The police armoury, not an ordinary bazaar was raided.

You were all looking at it. In Koraput, a magazine was looted and arms were taken away. All this reflects on the yellowness of the Government and pauperism. What is your policy? Your policy is, "Oh, you are a Naxal. Please come and sit next to me. Let us be friends. I will give philosophies to you. Please come to the national mainstream. I will give you admonition. I will do this; I will do that." You do like this. Something happens between you and them in a closed corner. Some unauthorised persons go and talk to them. Thereafter the talk fails. The Naxal goes back to the jungle and suddenly pounces on the public. They are not troubling the bureaucrats or the Ministers. They are troubling the ordinary people. What you do is, you make empty promises. You were talking with ULFA; you were talking with Jammu and Kashmir extremists and you were talking with Naxalites. You are talking but doing nothing. You are talking, talking and talking and doing nothing. It reflects on what. It reflects on dissatisfaction towards you and raid on public. This is a credit. Please own it. Don't disown it. You talk as if you are all *Ahimsa* people; you are all Gandhiji's disciples; you are all Mahatma Gandhi's grandsons and that you always go on the right path. You all talk like this. Who brought TADA? You brought it. Don't say that somebody had brought TADA. Don't blame others. TADA was your own brainchild. You let loose it on whom? You let loose it on patriotic people. You let loose it on them. After that you are very happy. You let loose it on the people who are securing our borders. Thereafter, you have alienated them. Thereafter, you have disowned them. You yourself withdrew TADA. Shri Rajiv Gandhi brought TADA and Shri Narasimha Rao withdrew it. So, don't blame others. You are saying as if others have brought it and you then withdrew it and that you are all right. No, you are the people who have led it first.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM (Tamil Nadu): But you misused it.

SHRI N. JOTHI: Sir, neither does he know what is 'use', nor does he know what is 'misuse'.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, POTA was misused in Tamil Nadu. Everybody knows it. TADA was misused in Tamil Nadu...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: In Tamil Nadu, now ordinary laws are totally misused. ...*(Interruptions)*... He is with us now. Sir, after the failure of talks with Naxalites in Andhra Pradesh, after their failure in Andhra Pradesh, what has happened? Sir, 700 advanced-technology rocket launchers were found there. This has happened after the failure of your talks. So, you please

reform yourself first. Please assess yourself first whether you are going on the right path; whether your advisors are proper and whether you are having proper technological, philosophical, diplomatic and moral considerations in these matters. Kindly consider it. Whenever we say something, you all get angry with us and say, "Who is this fellow to teach us? Who are these people to tell us this?" This minority Government which has no *locus standi* rather than the extra fittings, and this Government is being run with loose parts and one particular ally is remaining outside and always * you all, this Government must realise and you must realise...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jothi, while speaking if you use a little better words, it will please the whole House.

SHRI N. JOTHI: Sir, I am using correct words.

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF COMMERCE, MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY (SHRI JAIRAM RAMESH): What is *?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let me look into it.

SHRI N. JOTHI : I am saying screwdriver.

SHRI JAIRAM RAMESH: Being a lawyer, he should know that * is unparliamentary.

SHRI N. JOTHI: According to me, the CPI (M) is * you. At times, they loose the nut; they come here and blame you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is unparliamentary. It is removed.

SHRI N. JOTHI: I said about the usage of a screwdriver.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You have your own way of putting things...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: I am talking about intolerance of those people, not about the Chair.

Sir, in the recent Mumbai blasts, hundreds of people died. What is the lesson that you have learnt out of it? Nothing. Immediately after that came the Malegaon incident. You all go on special flights, and say, "We are very sorry; this should not have happened. We will find out who is responsible for this. We will not allow the terrorists from across the border

*Expunged as ordered by the Chair.

to enter our country." These are all mere speeches, and we are tired of speeches. Henceforth, at least change these words, "We will not allow cross border terrorism." Please don't use the same words. We have heard it hundreds of times, but no action has ever been taken. Now, what do they do in Israel when they are in trouble? I am not justifying that. But I am just giving you an example. If somebody troubles them, they go and hit against them...

SHRIMATI BRINDA KARAT: What are you talking?

SHRI N. JOTHI: Madam, it is my view. I am not carrying your view.

Likewise, if you feel that terrorists from Bangladesh or the terrorists from Pakistan are being encouraged by their respective Governments, go and hit their camps. But do not blame the Muslims. Earlier, in 70s and 80s, you were saying that the Sikhs were terrorists, and you brought TADA and slapped it against them. Now you are saying that Muslims are terrorists. You are pitching one group against the other, brother against brother. Please stop that. Every Hindu has started suspecting Muslims, and every Muslim has started suspecting Hindus. This is the culture you have brought in. This is the culture of the Congress (I). Earlier, they said that all Sikhs were bad people...

SHRI JAIRAM RAMESH: It is your own interpretation.

SHRI N. JOTHI: It is my view, and people take that view. You pitch one person against the other, and, through that, you want to run the Government. What is the difference between you and the British? They did the same thing — 'Divide and Rule'. Please change your *modus operandi* and your approach in these matters. If you want this country to be free from terrorist activities, you have to change certain things somewhere. Right from the start, you have to change yourself totally. Your ways and approach, so far, have not yielded any result, except your own face being aired on television quite often. I can give you a clue. This is what I have ascertained from various people, and it is for you to verify it. Wherever RDX is found, they say, it has ISI connection, and wherever cycle bombs are used or the cycle technology is used, they say, it has connection with Bangladesh. This is the information which I have received as an ordinary member, coming from a remote area of Tamil Nadu, where *baashan* was peacefulness up till May; of course, I will not endorse the present situation...*(Interruptions)*... You are now hobnobbing with your own bomb people. I warn you, please be careful. You have yourself declared

that Naxalism has spread in 180-185 districts, and that 100-150 districts are communally disturbed. If 180-185 districts are Naxal-prone, and 100-50 districts are communally disturbed, then, what remains? What remains is well-guarded bungalows of the Ministers of the Union Government. They alone are peaceful, not the rest of the public. ...*(Interruptions)*... What is this, Sir? You have to help me.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Do not take note of it.

SHRI N. JOTHI: If I say something about Sonia Gandhi, would they keep quiet?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is not going on record. Why are you worried? He is sitting and talking. That is not going on record. Whatever comment is made while sitting does not go on record. ...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: If I start talking about their leader...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. You talk about internal security.

SHRI N. JOTHI: They must know that internal security cannot be maintained by killing others; internal security can be maintained only if they have introspection about the policies they have adopted so far. The time has come when you should have introspection about the policies that you have adopted so far.

Sir, right from the day I took oath in this House, I have had a feeling that the Central Government is run by officers alone, and not by politicians. You all get carried away by the officers. And I could say that the present Government gets carried away much more by officers. Maybe, you are overly working on other matters, or you are not in a position to concentrate.

Sir, I have a great admiration for Shri Shivraj Patil. Whether he likes me or not, I really like him very much. The first reason is that he is a lawyer; he is from my own fraternity. The second reason is that he always keeps a smiling face, except when he looks at me! I like those pleasing manners very much. But I want to pray to God! Sir, so far, you have managed somehow or the other; but the future days are not good. Please be a little more careful. Take us also into confidence. Please take our suggestions also in the matter. Sir, if anything could occur in Mumbai, you may kindly understand that it could occur anywhere else in India. Don't treat Members of other parties as unwanted people. We are also of some use to you, if your own colleagues are not.

Sir, I wish to appeal to you as an Indian citizen. The internal security situation is very much alarming. If you want to retrieve this country to a peaceful situation, so that your party is also strengthened further, kindly take our views also. Have frequent meetings with all the political parties.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Why don't you give your views on the floor of the House?

SHRI N. JOTHI: I am giving my views now. Please have meetings of all the political parties, the recognised political parties, both regional and national, frequently. And do not shun them away. We are not sharing power with you but we want to share the concerns of this nation. Please take us into confidence. Do not treat the Samata Party as unwanted, or Mulayam Singh as unwanted or Shrimati Jayalalitha as unwanted. Do not go by those things. We might also be of some use to you. We could be more useful to you than others. Please have our views. We have also ruled the States. We have also ruled at the Centre. We also know a little about it.

Sir, another suggestion that I wish to make is this. I have had experience as a lawyer. Normally, the repetition of an occurrence or an incident leads to a common pattern; a thief would always have a particular pattern of theft. Like that, terrorists also have a particular pattern in striking at public and carrying out acts of terrorism. It is not difficult to appreciate; it is very easy to understand. What you require is courage, courage to go across the border and strike at these camps where training is being given to them. Please do that. Unless you do that, there is no point in safeguarding ourselves. It is something like a saying in Tamil meaning, whoever is afraid of tiger, please land on me, so that he will be very safe. See, like that, don't keep yourselves within your borders, and try to control something that is coming from outside the borders. You have to do something by crossing your borders also to eliminate those camps. As long as those camps persist in your neighbouring countries, your internal security will be a problem. So, this is a matter to be tackled not only by the Home Ministry but also by the Defence Ministry. This is what I feel, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Mr. Ram Jethmalani.

SHRI N. JOTHI: Sir, I will conclude in two minutes.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now. You have taken the maximum time.

SHRI N. JOTHI: Sir, I rarely speak.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: When you speak, you take all the time which you have given up.

SHRI. N. JOTHI: Sir, look at page 39 of this insolvency notebook, the yellow book. Sir, kindly see, at page 39, the increase in the number of naxalite activities after you come to power; after your talks with the naxalites; after the failure thereof. In 2004, the number of incidents is 310. In 2005, the number of incidents is 532. As far as the situation of 2006 is concerned, we don't have the information at hand.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: It is given on page 40.

SHRI N. JOTHI: Sir, I am talking about page 39. I will come to page 40 a little later.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jothi, no little later. You cannot take your own time and go on leisurely. There is a time constraint. Please conclude now.

SHRI N. JOTHI: Sir, we are talking on internal security.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now. ...*(Interruptions)*... Everybody is talking on it. Please conclude now. ...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: Sir, internal security is not somebody's security, my own security.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Don't worry, you are safe.

SHRI N. JOTHI: It is concerned with the security of the whole nation. And we must address it in all seriousness.

MR.DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jothi, please conclude now.

SHRI N. JOTHI: Yes, Sir, I am concluding. Sir, the number of police personnel killed has increased from six to 22. The number of civilians killed has increased from 16 to 184, and the number of naxalites killed has increased from 47 to 160. That means, what? More naxalites are coming in. ...*(Interruptions)*... You have to give me some more time, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: See, you were about to conclude.

Then, again, you have started...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: Sir, the hon. Minister prompted me.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, give him two more minutes. ...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: Now, I come to page 40. As per page 40, the number of incidents in 2006, so far, is 163. Sir, you have to cross two more months.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: From 449 it has come down to 163.

SHRI N. JOTHI: But, rocket launchers have come, in between. Earlier, there were no rocket launchers because your fraternal party is saying, they are producing it at Ambattur, after June. After 13th May...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, in case the rocket launchers were produced...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: After 13th May, the DMK Government ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I am sorry. I have to call the next speaker. Mr. Ram Jethmalaniji. ...*(Interruptions)*...

SHRI N. JOTHI: They have produced it, and sending it. ...*(Interruptions)*... Sir, we are speaking about our scientists. ...*(Interruptions)*... More scientists are there, after the DMK Government came to power.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now, Mr. Jothi.

SHRI N. JOTHI: Sir, my final request to you is this. ...*(Interruptions)*... Sir, you want me to conclude or you want me to read?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; please conclude.

SHRI N. JOTHI: So, I will conclude this way, in my own way. Sir, the rocket launchers have come from Tamil Nadu, after May 13th. It is a red signal.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: No, Sir. The hon. Member is giving wrong information to the House.

SHRI N. JOTHI: Sir, even Tamil Nadu is not safe now. Within six months, it has happened. Sir, have your one eye on Tamil Nadu also. Yes, it is very dangerous. It is brewing now. It is a hotbed now. It is a springboard now for all these activities. Sir, in your heart of hearts, you note this. If you take care of Tamil Nadu scenario, half of this country will be safe in future. Thank you, Sir.

SHRI RAM JETHMALANI (Nominated): Thank you, Sir. Sir, this subject is doubtless of great importance affecting as it does almost everyone in the country and the humbler the more vulnerable. Frankly, Sir, I do not know where to start but, I think, I should start with a little interlude between my friend Mr. Jothi and the Home Minister.

I think, Sir, the first thing that I should like to start with is a very serious danger which is being posed strangely and paradoxically by our obsession with Press publicity. You might wonder how. Look at the morning's "The Hindu" today. It carries a report by Vice-Admiral Bedi, Flag Officer Commanding-in-Chief of the Southern Naval Command. They were holding Navy Week celebrations and they decided that admission of the public to witness the celebrations would be restricted. I have no quarrel with that decision. But, Sir, what I quarrel with is that this made the Vice-Admiral hold a Press conference at which the Vice-Admiral said, "First thing, we do not have a very good report on the security situation. Full-fledged attack on the defence training establishment of Dehradun was nipped in the bud two years ago." What has a justification for restricting public entry into the current Navy Week celebrations got to do with their nipping in the bud an attack which was supposed to be taking place on the defence training establishment in Dehradun?

Obviously, the Vice-Admiral wanted to use this occasion for some praise and for some publicity. But it did not occur to him that he committed a vicious breach of the most elementary security intelligence operations. You do not yield to your opponent information which is true. You have to yield them information which misleads him. You tell him that we know, as the Home Minister himself the other day said, 'You are trying to occupy some adjoining islands and trying to get some space in the sea so that you would be able to mount an attack on us'. You should tell them directly the opposite. You should not tell them that you know about that. You should tell them that you do not know anything about it so that they should attack when you know and then you should be able to deal with them.

Sir, this habit of going to the Press and talking about security matters is some activity which has got to be avoided like poison. When Mr. Jothi said, "I have some proposals to give you, please take us into confidence", the Home Minister retorted saying, "Why do not you say this on the floor of the House?" If Mr. Jothi had succumbed to this and given his proposals for ensuring security on the floor of the House, I would have considered him anti-national. All these are secret matters which should be discussed and discovered in secret conclaves.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Would you yield for a minute?

SHRI RAM JETHMALANI: I can yield for you any time for any thing.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: First of all, do not go by what you read in the newspapers. You yourself get the news confirmed and then make a comment. If you think that the DGs and the Home Minister should not sit together and discuss the situation, then where is the occasion? The statements, which have appeared in the newspapers, are not correct.... *(Interruptions)*... This statement, which has been alleged to have been made, was not made to the public at large nor to the media persons but to the DGs, the Directors-General of the State Police. If you do not get the information and keep commenting on this, what is it that we are creating? Confusion! Or, are we enlightening ourselves? ...*(Interruptions)*...

SHRI RAM JETHMALANI: Sir, I am not ...*(Interruptions)*...

SHRI C. RAMACHANDRAIAH (Andhra Pradesh): Newspapers are publishing everything. ...*(Interruptions)*...

SHRI RAM JETHMALANI: I am talking of this morning reports, the speech of this gentleman. But when you say, "don't," I have never said anything where you made your statement. ...*(Interruptions)*... I read about it in the newspapers. But when you told Mr. Jothi, let us discuss it on the floor of the House, floor of the House is the least qualified place for discussing how to carry on secrecy operation. ...*(Interruptions)*...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: It was one year before. ...*(Interruptions)*...

SHRI RAM JETHMALANI: I quoted only what is said this morning about this gentleman. ...*(Interruptions)*... What do I do if a news item appears in a responsible newspaper? ...*(Interruptions)*... What do I do? First I write to the gentleman. ....*(Interruptions)*... So, I first write to the Hindu. ...*(Interruptions)*... That imposes on us a burden which I do not think...*(Interruptions)*...

SHRI AMAR SINGH (Uttar Pradesh): What will happen if he does not come on the line? ...*(Interruptions)*... The Editor of the Hindu...*(Interruptions)*...

SHRI RAM JETHMALANI: Now, as I said, about collecting security intelligence, keep that intelligence to yourself and do not disclose it to your enemies. Disclose to them the contrary of it. If you think and you know about it that your defence establishments are absolutely secure

because of your vigilance, tell them that they are most insecure. We have no danger at all; we have never felt any danger and they cannot penetrate. Let them come and then deal with them. That is the way in which you must resolve these problems.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI) in the Chair]

Now, Sir, then he said that the Navy is now adding more teeth to its air fleet, we are now buying 16 MiG-29K aircraft from Russia and the delivery will take place in two instalments in 2007 and 2008. In other words, you are letting your enemies know that at least in 2006 we do not have enough teeth for our naval defence. I mean he is a military officer. According to me, the man should be pulled up and told that these are not the things, which you have to go on discussing with the Press and disclosing to the Press. If an arms dealer wants to secure this information that India is now acquiring these MiG-29, you will haul him up under the Official Secrets Act and keep him in jail for five years. Do something about it, these officers. Now let me deal with some of the points which have been made because as non-party Members we have such a limited time that we have to hurry up for everything but only, Sir, when a very friendly figure sits there, we have a full expression for our views. Now, Sir, one of the points that has been made is that you must toughen up our legislation, anti-terror legislation. Now, Sir, let me tell this House and let me tell my hon. friend, the Home Minister, please do not fall into this trap ever. The greatest success of terrorist activity is to convert the target State into a terrorist state. That is their greatest moral and spiritual triumph and when you begin to behave like them. What is this tough legislation you are talking about? TADA and POTA did not prevent terrorism. They will never do it. What is the meaning of tough legislation? You increase the penalty. Now, the penalty of death — there is no other penalty. Then, what else can you do with tough legislation? Reduce the burden of proof on the prosecution. It was only yesterday at an International Law Conference, a responsible lawyer got up and said, 'let us have an anti-terror law. A terrorist shall be presumed to be guilty until he proves the contrary.' Now, Sir, I hope that we realise that we have other civilized values to defend. Terrorism is not the only thing we have to guard against. It is this kind of legislation which was misused all along against, first, the Sikhs and then the Muslims, and, tough legislation is not the answer to the problem. The problem is of enforcement of the existing law. After all, terrorism means murder of innocent and other offences. They are all offences under the Penal Code. They are non-bailable offences. They are punishable with life or death.

The point is you must be able to catch them. You must be able to catch them and procure evidence by civilized methods. Then, you have a system of justice which is swift and sure, not that a trial goes on for 13 or 14 years in which some accused become lunatics, some die and some are so reconciled to jail life that they will prefer to remain there for the rest of their life. Unless our criminal justice system becomes completely swift and sure, be sure, the deterrent value of all punishment is gone and nothing will happen.

I want to raise Afzal case, which is being politicised so much. I don't know whether Afzal was a suicide bomber. But, at least, the charge made against him was that he was a conspirator with suicide bombers. Sir, to a suicide bomber death means nothing. On the contrary, life imprisonment to him is a much bigger punishment. Why? It is because his indoctrination is that the moment you die; within the next few seconds you are going to meet the houris in heaven. You have to keep him away from the houris as long as you can. Keep him for life in jail so that he does not meet those women. So, Sir, the death sentence does not serve any purpose.

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, I don't understand why women brought into this sort of argument.

SHRI RAM JETHMALANI: The houris are brought in by indoctrination.

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, is this the issue to be discussed here?

SHRI RAM JETHMALANI: Why should I not talk about women? I like them.

SHRIMATI BRINDA KARAT: This is sexy remark made on the floor of the House. This is really objectionable.

SHRI RAM JETHMALANI: There is nothing objectionable.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Mr. Jethmalani, you are doing well. Please carryon with your speech.

SHRI RAM JETHMALANI: This tough legislation is of no use.

The power of the hon. President, again, is limited. Again, hon. Home Minister said that the President will decide. The hon. President will decide on the advice of the Cabinet. He cannot exercise independent powers outside the Cabinet's advice. He is bound by the advice of the Cabinet in this matter. And the Government has to decide. There is no doubt about it. But, I am quite sure, that the Government will consider the pros and

cons of this whole situation. Whatever points are raised in the Mercy Petition will be considered. One thing must be said in favour of that man. I want to say that the man asked for being defended by four lawyers and he gave their names. The judge contacted two. Both of them said, 'No.' Thereafter, the judge did not contact the other two in the list of four, nor did he contact any one in the list of lawyers which exist in every court who are supposed to do free work. But, Sir, I regret to say that he got a junior, raw advocate. I hope, I am not defaming the lawyer. But the defence was so badly conducted that the poor fellow never got a fair trial under any circumstances. So, Sir, we are not defending Mr. Afzal. We have to think of purity and the greatness of our legal system. When a person, who is standing his trial for life, asks for the service of a lawyer, it is the professional duty of a lawyer to respond and to appear free, without charges and for lawyers to refuse is a denial of justice and it makes the entire trial unworthy of being called a trial. So, if Afzal has to be pardoned, he should be pardoned because we are trying to bring back the reputation of our Judicial system, not because of any sympathy with Afzal. I am quite sure that even if he had been defended by an able lawyer like Mr. Arun Jaitley, probably, the result would have been the same, maybe. But, then, at least, nobody would have been able to say that the legal system has failed. The legal system has done its job and the man has been found guilty after a good and a fair trial. So, Sir, ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH : What would have happened if Mr. Jothi had defended him. ...*(Interruptions)*...

SHRI AMAR SINGH: What about Mr. Abhishek Manu Singhvi?

SHRI RAM JETHMALANI: He is not a criminal lawyer. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): This is not a court room, so, I think, we can carry on with the debate here.

SHRI RAM JETHMALANI: The next point which I wish to make is this. And, this is for the benefit of my friends there on that side. Security depends on national solidarity. Our own nationals, when they are denied security, dignity, equality and fraternity, would become hospitable soil for providing shelter and helping terrorists. They will become a recruiting ground for terrorists. And, they will, perhaps, themselves become recruits in the terrorist lines. Now, Sir, I do not wish to say anything. But, I want everybody, particularly, my friends on that side to ask their own conscience

a question. Don't answer it in public, answer it to your own conscience. Have you promoted solidarity or have you produced a kind of division which creates motivation for people joining the lines of terrorists and becoming anti-nationals? I leave it at that. This is a matter which everybody in this whole House should consider, and consider carefully and consult his own conscience. Then, Sir, the next point which I wish to again mention is that compromise with terrorists is suicidal. If terrorists get a feeling that our target is a coward, that he wishes to avoid terrorism, wishes to avoid the consequences of terrorist activity, is willing to compromise with us, terrorism will flourish. It will never come to an end. Sir, I regret that in the past when our famous leader, Mr. V.P. Singh was the Prime Minister, and that lady was abducted by the so-called terrorists. To secure liberty of that girl, we compromised and handed over a large number of terrorists in exchange. This is a kind of thing, which you must learn never, never to do.

Sir, when our Indian Airlines plane was hijacked during the reign of Shri Atalji...*(Interruptions)*... I am now talking of a time when Shri Atalji was the Prime Minister and the Indian Airlines plane was hijacked. First of all, Sir, think of our security. They are talking big about security. They depended upon a Security Advisor, who allowed the plane to go away from Amritsar where a school mob could have stopped it. And the school mob, by putting a few chairs and benches in front of that plane could have stopped that plane from taking off from the Srinagar Airport. You allowed it to fly in spite of the fact that they had one hour and forty-five minutes time in Amritsar. I told them that such a Security Advisor should be dismissed forthwith. But they did not do it because they depended so much on that Security Advisor. Then, when the plane got into Kandahar, and they were thinking of making this exchange, I happened to be, at that time, somewhere in Madurai. I was a Minister. On the cell phone I called up the Prime Minister and I said, "Please take these terrorists from the jail cells, keep soldiers with guns on their head, and tell those people that the first passenger of the Indian Airline you shoot, we are going to shoot down all your terrorists here.

And nobody listens, and the greatest humiliation which I have ever suffered as an Indian citizen is that when my Minister, a responsible Minister of the Union Government, *and goes and makes home delivery of terrorists to their compatriots in Kandahar. Therefore, Sir, let us...*(Interruptions)*...

---

*Expunged as ordered by the Chair.

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया : जेठमलानी जी, आप केबिनेट में थे। ...(**व्यवधान**)... आप तो उसी केबिनेट में थे। ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेश भारद्वाज (हिमाचल प्रदेश): उसके कारण से आपने रिज़ाइन नहीं किया था...(**व्यवधान**)... आपने उस समय रिज़ाइन नहीं किया था।

SHRI RAM JETHMALANI: I was; I agree. I was ashamed of it, and I did my best to prevent it...*(Interruptions)*.... This is a recorded fact which nobody can deny. Therefore, let us not trade charges here, who is soft and who is not. Everybody seems to be soft in his own way. This softness has got to be avoided. Let us all resolve that never, never shall we surrender to terrorists in spite of the fact that it may involve our own brothers, sisters, husbands, wives, or our dearest friends. We will sacrifice them but we will not sacrifice the liberty and the dignity of this country. If you do that, the terrorists will find that they are not really in good business. Now, they find that they are in good business. Sir, the next thing is this. After all, Sir, as regards our terrorists problems, apart from what is happening in the North East, to some extent, and what is happening in the South, the naxalite menace, and so on, forgetting that, Sir, the major problem is Kashmir. In 1992, the Security Council started taking interest in international terrorism. Their first Resolution was of 1992 when they said that the Security Council would hereafter deal with international terrorism. Sir, India didn't move. In 1999, two years before what happened on September 11, in New York, they had passed a Resolution imposing sanctions on the Al Qaida. The Security Council did it. There was not a ripple in India. We were sleeping. We thought that nothing will come to us and we are not to be worried at all. We should have then extended a word of praise to the Security Council that you have now entered a new field, and we are prepared to cooperate with you in curbing international terrorism. Nothing of that kind happened, because, Sir, we have got some allergy to the Security Council and all these organisations which the World Body has created. And, then, Sir...*(Time-bell)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): A friendly reminder from a friendly face.

SHRI RAM JETHMALANI: Yes, Sir, I won't take long. Sir, as I said, today, if Kashmir is the main problem, first of all, please strengthen the peace process, compel the Government to strengthen it, do it with a little more hurry, with a little more sense of urgency. Sir I have no doubt that the peace process is like the holding of wedding in a minefield. There

also, those who conduct the peace process themselves are in serious danger. But, today, why don't you talk to the Security Council and tell them that 'on both sides of the LoC please post your peace corps'? Invite the peace corps under the United Nation's auspices; keep them on both sides of the LoC and see if terrorism does not disappear. But, Sir, there is nobody even to take advice, nobody listens to anybody else. This is some kind of a thing which is going on in secret conclave. Who takes these decisions, we don't know. Lastly, again, I am going back to July 1998. Your Government abstained from the creation of the International Criminal Court which has now, fortunately, come into existence. In spite of the obstructions by India and America, that Court has come into existence and that Court is supposed to deal with all big crimes, particularly, crimes against humanity, which includes terrorism. Please reverse that decision of July 1998; it was an absurd decision and it is an absurd continuance of that decision, but nobody seems to be applying his mind to that problem. The International Criminal Court has started functioning. Let India take its rightful place now and, perhaps, you will have one Indian judge or two Indian judges out of the 18 on that court, and that is one way of dealing with international terrorism. Sir, I hope I have not really misused your goodness. Thank you.

श्री अबू आसिम आज़मी (उत्तर प्रदेश): थैंक्यू सर, आपने मुझे आज बहुत ही अहम मुद्दे पर बोलने का मौक़ा दिया है, इसके लिए मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूं। जबसे मैं पार्लियामैंट में आया हूं, मैं देख रहा हूं कि हर सैशन में इस मुद्दे पर डिस्कशन होता है। सर, इस मुल्क़ में साम्प्रदायिक दंगे इंटर्नल सिक्युरिटी के लिए बहुत बड़ा ख़तरा बन चुके हैं। सर, आज़ादी के बाद इस मुल्क़ में 13,000 साम्प्रदायिक दंगे हुए। एक सीनियर आईपीएस ऑफिसर विभूती नारायण जी की सर्च के मुताबिक़ 85% हर दंगों में एक ही समुदाय के अल्पसंख्यक लोगों की जायदाद बर्बाद कर दी गई, उन्हें मारा गया और पुलिस ने भी उन्हीं को गिरफ्तार किया। सर, मैं बड़े ही अफसोस के साथ यह कहना चाहता हूं कि हम इस मुल्क़ में रहते हैं और इस मुल्क़ में टैररिज्म खत्म होना चाहिए, नफ़रत खत्म होनी चाहिए। हम हमेशा देखते हैं कि war against terrorism के लिए नये-नये कानून बनाए जाते हैं, उसके लिए बातें होती हैं, खुसूसी अदालत बनाई जाती है, खुसूसी फोर्स बनाई जाती है, उसके लिए अलग से खुसूसी फंड बनाया जाता है, लेकिन war against कम्युनलिज्म की बात कभी भी नहीं की जाती है। फ़िरकावाराना फ़साद से निपटने के लिए कोई क़ानून नहीं बनाया जाता, उसके लिए कोई खुसूसी अदालत या खुसूसी फ़ंड नहीं बनाया जाता। अभी मेरे उस तरफ़ के साथी कह रहे थे कि यह कम्युनलिज्म कोई बहुत बड़ा मसला नहीं है या साम्प्रदायिक दंगे

कोई बहुत बड़ा मसला नहीं है। मैं इनको याद दिलाना चाहता हूं कि 1984 में सिख लोगों के साथ बहुत बड़ा फ़साद हुआ था, कितने लोग मारे गए थे, 1989 में मेरठ और मलियाना में फ़साद हुआ था, 1992-1993 में मुम्बई में फ़साद हुए थे, 2002 में गुजरात में फ़साद हुए थे, लेकिन आज तक उन मुजरिमों को सज़ा नहीं मिल सकी। मुम्बई फ़साद में 2500 इफराद का क़त्ल हुआ, उन्हें मारा गया, तो क्या यह दहशतगर्दी नहीं है? यह मिलिटैंसी नहीं है? यह टैररिज्म नहीं है? लेकिन 247 लोगों को बॉम्ब ब्लास्ट से मारा गया तो वह टैररिज़्म है, वह दहशतगर्दी है। गुजरात में 2002 में 3000 लोगों का क़त्ल कर दिया गया, यह दहशतगर्दी नहीं है? लेकिन ट्रेन में सिर्फ़ 80-85 लोग जला दिए गए, तो यह टैररिज्म है। मैं यह कहना चाहता हूं कि इस तरह से वायोलैंस की अलग-अलग कैटेगरी बना करके, इंटर्नल सिक्युरिटी को एक बहुत बड़ा ख़तरा हो रहा है। मुल्क़ का क़ानून सबके लिए एक ही तरह का बनाया गया है, चाहे आसमान की ऊंचाई पर बैठा हुआ कोई शख्स हो या ज़मीन पर भीख मांगने वाला कोई शख्स हो, सबके लिए एक तरह का क़ानून बनाया गया है, लेकिन इस मुल्क़ में अलग-अलग क़ानून चल रहा है। सर, मैं आज़ादी के वक्त तो नहीं था, लेकिन मैंने किताबों में पढ़ा है कि आज़ादी के पहले जब इस मुल्क़ में अंग्रेजों की हुकूमत थी, तब हम गुलाम थे, हमारी बातें सुनी नहीं जाती थीं, हमारे साथ इस मुल्क़ में जुल्म और ज्यादती होती थी। उस वक्त, जब इस मुल्क के अंदर मंगल पांडे को फांसी दी गई थी, तो इस मुल्क़ के नौजवान सड़क पर उतर आए थे और 1857 की ग़दर में, जब सब नौजवान सड़क पर उतर आए तो 1860 में पुलिस ऐक्ट बनाया गया। उस वक्त अंग्रेजों की सरकार थी और जनता हिन्दुस्तान थी, वह जनता भारतवर्ष की थी। अंग्रेज़ों की सरकार के द्वारा भारतवर्ष की जनता के लिए 1860 में पुलिस ऐक्ट बनाया गया और अंग्रेजों की पुलिस को डंडा पकड़ा दिया गया कि वे लोग जितना चाहें हिन्दुस्तानियों को डंडा मारें, लेकिन ये हिन्दुस्तानी पुलिस से डंडा खींच कर उसे मार नहीं सकती है। क्या आज उससे कुछ अलग हो गया है?

सर 1947 में अंग्रेज चले गए, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि आज इस देश के अंदर उससे बुरी दशा है। सर, मैं बहुत दुखी दिल के साथ कहना चाहता हूं कि हमें इस देश में ऊधम सिंह, शहीद भगत सिंह और अशफ़ाकउल्लाह ने अपनी जान दे कर रास्ता दिखाया था, आज जुल्मो-ज्यादती बढ़ती जा रही है और बहुत से नौजवान उस रास्ते पर जा रहे हैं। जब जुल्म और नाइंसाफी बढ़ती है, तो आतंकवाद जन्म लेता है। आज मैं पूछना चाहता हूं, यहां होम मिनिस्टर साहब बैठे हैं, इसलिए मैं खुल कर बात करना चाहता हूं और इनसे पूछना चाहता हूं कि क्या इस मुल्क़ में दो तरह का क़ानून चलेगा? मैं आपको बता दूं, यहां पर डा॰ फारूक अब्दुल्ला साहब बैठे हुए हैं, मुम्बई में ब्लास्ट हुए, उसी वक्त से मुसलमानों

का नाम लिया जाने लगा। उसके बाद से जो गिरफ्तारियां हुई हैं, मैं रोजाना अखबारों में पढ़ रहा हूं कि बड़े-बड़े जो उल्मा-ए-करम हैं, जो नमाज पढ़ाते हैं, हदीस की तालीम देते हैं, जो गलत नहीं बोल सकते, वे कुरान शरीफ हाथ में लेकर कसम खा रहे हैं कि गलत लोगों को गिरफ्तार किया जा रहा है। एक कश्मीरी कश्मीर छोड़कर आया था और मुम्बई के गेस्ट हाऊस में था, उसको गेस्ट हाऊस से गिरफ्तार किया गया और उसके बाद पुलिस स्टेशन में बैठाकर उसको दो दिन तक मारा गया। जब उसके कमरे की तलाशी ली गई तो उसके पास बीस हजार रुपए मिले, उन्होंने कहा कि रुपए दे दो। उसने कहा कि साहब मैं कश्मीर से चलकर किसी काम के लिए आया हूं, मेरा रुपया आप ले लेंगे तो मैं कैसे काम करूंगा? फिर उससे दस हजार रुपए ले लिए। मैं आपको एक दूसरा किस्सा बता रहा हूं।

आज इंटरनल सिक्योरिटी की यह सबसे बड़ी प्रॉब्लम हल नहीं होगी तो आप पूरी मुंबई, पूरे हिंदुस्तान में सिक्योरिटी बढ़ा दें, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह मसला हल नहीं हो सकता। एक आदमी को कुरला के अंदर पकड़ा गया। उसकी गलती यह थी कि सिमी के ऑफिस के बाहर केले की गाड़ी लगाता था। उससे पूछा कि सिमी वाला कहां रहता है। उसने कहा कि मुझे नहीं मालूम। उसे पकड़कर ले गए और पुलिस वालों ने अपनी चप्पल निकालकर, उसके मुंह को फाड़कर अंदर डाल दी और कहा कि अगर यह चप्पल गिर गई तो इसमें पखाना लगाकर तुम्हारे मुंह में डाल दूंगा। मैं सारी चीजें लेकर गया। यहां मुंबई से लेकर आया। एक औरत, बेचारी जो बुरका पहनती थी, उसका बुरका खींच लिया गया, कहा कि तुम बुरका उतारो, उसने कहा कि मैं बुरका नहीं उतारुंगी। उसका बुरका उतारकर, पैर में लपेटकर दिखाया कि, देखो तुम्हारी इज्जत। दो पढ़े-लिखे नौजवानों को गिरफ्तार किया गया। अगर वे गलत हैं तो उन्हें फांसी की सजा दीजिए। इसे कोई रोकने वाला नहीं है। लेकिन उन्हें पुलिस स्टेशन में बिठाकर, उसके बाप के सामने उसके पूरे कपड़े उतार दिए गए और कहा गया कि इस बात को तुम कबूल कर लो, नहीं तो तुम्हारी कितनी इज्जत है, यह मैं तुम्हें अभी बता दूंगा। मैं ऐसी चीजें लेकर पार्लियामेंट के अंदर आया। मैंने प्राइम मिनिस्टर से बात की, यहां से पंद्रह लोगों का डेलीगेशन मुंबई भेजा गया, लेकिन आज तक उसकी कोई इंक्वारी नहीं हुई। क्या इस देश में दो तरह का कानून चलेगा? मैं आपको बता दूं मुंबई में घाटकोपार के दोषी लोगों को कोर्ट से जमानत मिल गई। निचली कोर्ट से जमानत मिलने के बाद पुलिस ने अगली कोर्ट में जाकर उसकी जमानत कैंसिल करवा दी। चार महीने के बाद फिर मुंबई में घाटकोपार में जो बस में ब्लास्ट हुआ था, सारे लोग निर्दोष छूट गए और फिर इसी पुलिस ने अगली कोर्ट में जाकर इनकी जमानत कैंसिल करवाकर जेल में डाल दिया। इसके बाद एक नौजवान, उसी ग्रुप का था, ख्वाजा युनूस, उसको इंक्वारी

के नाम पर मार दिया गया। मारने के बाद एक पुलिस वाला गिरफ्तार होता है और गिरफ्तार होने के बाद निचली अदालत से, मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट की अदालत से 302 के मुकदमे में रिहा हो जाता है। लेकिन एक साल से ज्यादा हो गया, आज तक यह पुलिस और यह सरकार अगली अदालत में उसकी बेल कैंसेलेशन के लिए नहीं गई। सर, क्या यह इंसाफ इस सरजमीं में है? क्या इस सरजमीं पर इंसाफ खत्म हो चुका है? अमर सिंह जी को मैंने बुलाया कि आप आइए, महाराष्ट्र सरकार हमारी बात नहीं सुनती, आप आइए। उसकी मां ने चीफ मिनिस्टर से दामन फैलाकर कहा कि विलासराव देशमुख, तुम मेरे जिंदा बेटे को नहीं दे सकते, तुम मेरे मरे बेटे की लाश मेरे दामन में डाल दो, मैं इसे नहला-धुलाकर कब्रिस्तान में डाल दूंगी, लेकिन आज तक उसके बेटे की लाश नहीं मिली है। महाराष्ट्र में हाई कोर्ट आज कह रहा है—कहां चले गए होम मिनिस्टर साहब, बैठे हैं, मैं कहना चाहता हूं कि यह मुल्क कानून से चलेगा या किसी की* से चलेगा। आज हाई कोर्ट कह रहा है कि ख्वाजा युनूस के कत्ल के मुलविस ग्यारह पुलिस वालों को मुंबई से ट्रांसफर करो। मगर आज मैं देख रहा हूं कि जंगल राज है। उसका ट्रांसफर नहीं हो रहा है। आज आपने देखा कि मुंबई ब्लास्ट के लोगों को सजा मिल रही है। जरूर सजा दीजिए, जिन्होंने ब्लास्ट किया है, लेकिन यह मैं नहीं कह रहा हूं, यह श्रीकृष्णा कमीशन ने खुलेआम लिखा है कि बाबरी मस्जिद की शहादत, मुंबई के झगड़े, मुंबई के फसादात की वजह से मुंबई में यह ब्लास्ट हुआ। सजा दीजिए, लेकिन आप इन्हें सजा नहीं देंगे। आपको उनको भी सजा देनी पड़ेगी जिनकी वजह से यह हुआ है। "तुमने हर खेत में इंसान के सिर बोए हैं, जमीन खून उगलती है तो शिकवा कैसा"। आज कानून खत्म, आज हम समाजवादी पार्टी चलाते हैं, हमारे पास पंद्रह से सोलह एमपी यहां पर हैं, इकतालीस मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट वहां पर हैं। इस देश के 103 करोड़ लोगों में से 20 करोड़ लोगों पर मुलायम सिंह यादव की सरकार चलती है। अमर सिंह और मुलायम सिंह जी को मैं मुंबई बुला रहा हूं तो वहां की सरकार ने अबू आसिम की मीटिंग को कैंसिल करवा दिया कि अत्याचार विरोधी रैली अबू आसिम नहीं कर सकते। 27 अक्टूबर को उत्तर प्रदेश की सरकार ने महाराष्ट्र सरकार को परमिशन के लिए पेपर भेज दिया कि 21 नवम्बर को मुलायम सिंह यादव जी शिवाजी पार्क में मीटिंग करेंगे। आपको पता है कि सिर्फ दो दिन पहले मुझे कहा गया कि लॉ एण्ड ऑर्डर की प्रॉब्लम है, आप मीटिंग नहीं कर सकते। मैंने देखा कि उसी दिन गेट वे ऑफ इंडिया पर विलासराव देशमुख जी मीटिंग कर रहे हैं। कोर्ट ने कहा कि मीटिंग नहीं कर सकते। मैं कोर्ट में गया, उसके बाद भी मीटिंग हो गई। अबू आसिम मीटिंग नहीं कर सकते, इसलिए कि

*Expunged as ordered by the Chair.

खैरलांजी में दलितों को मार दिया गया है। दलितों को खैरलांजी में मारने की वजह से आठ सौ, नौ सौ किलोमीटर दूर तक मुंबई में मीटिंग नहीं हो सकती। मैं इनसे कहूं कि ये बहुत बात करते हैं कि फिरकापरस्तों से लड़ रहे हैं, लेकिन नरेन्द्र मोदी की मीटिंग, उसी नागपुर से, जहां से सौ किलोमीटर दूर खैरलांजी है, वहां उनकी मीटिंग हो सकती है। अगर इस तरह से इस मुल्क में डिस्क्रिमिनेशन होगा तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि इस मुल्क में कभी भी दहशतगर्दी खत्म नहीं हो सकती। सर, मैं आपसे कहना चाहता हूं, आप इस बात को नोट कीजिए कि महाराष्ट्र में, मालेगांव में गणपति का त्योहार चल रहा था। गणपति के त्यौहार में मालेगांव के हर मंदिर के अंदर बीस-बीस पुलिस वाले आला लेकर एक-एक आदमी को चेक कर रहे थे। उसके बाद वे गणपति के मंडल में जा सकते थे। दो दिन के बाद गणपति उत्सव खत्म हो गया और शब्बेरात आई। उसी महीने की 3 तारीख को वहां के एस.पी., वहां के पुलिस वाले उस कब्रिस्तान में, जहां पर यह ब्लास्ट हुआ था, वहां आए और कहा कि हमारे पास खबर है कि कुछ फकीरों के जरिए यहां गड़बड़ हो सकती है। उन्होंने कहा कि ये जो फूल बेचने वाले कब्रिस्तान में आते हैं, अगरबत्ती वाले आते हैं, फकीर लोग आते हैं, अब की बार इन सबको पुलिस, कब्रिस्तान के गेट से डेढ़ सौ मीटर दूर रखेगी। उन्होंने कहा कि ठीक है, ऐसा करिए। उस कब्रिस्तान पर आज से नहीं, पिछले कई सालों से हर जुम्मे के दिन पुलिस की वैन खड़ी होती है। आपको पता है कि इस बार सिक्योरिटी का कितना बड़ा lapse हुआ है? वहां पर उस दिन पुलिस ने कहा कि हम इनको गेट से दूर रखेंगे और पुलिस वहां से नदारद थी। वे कहकर गए कि अब की बार लोग यहां से डेढ़ सौ मीटर दूर रहेंगे, लेकिन वहां पर कोई नहीं आया, सिर्फ दो होमगार्ड भेज दिए गए। पहले वहां पुलिस की वैन रहती थी, लेकिन इस बार पुलिस की वैन वहां पर नहीं थी। मैं आपको यह भी बता दूं, यह मैं नहीं कह रहा हूं, वे लोग कह रहे हैं, उलमा-ए-कराम, जो यूनिवर्सिटी से पढ़कर आए हैं, जो आज तालीम दे रहे हैं अरबी की, जो कुरानशरीफ की तालीम दे रहे हैं, वे कभी झूठ नहीं बोल सकते, उनका बेटा नहीं पकड़ा गया है, लेकिन वे कह रहे हैं कि उस वक्त जब लाशें मिल रही थीं, तो उनमें एक लाश ऐसी थी जिसकी दाढ़ी नकली थी और वह लाश थोड़ी देर के बाद गायब हो गई। इसकी इंक्वायरी होनी चाहिए। हो सकता है कि यह बात गलत हो। मैं ऐसा नहीं कह रहा हूं कि यह बात सही है। बार-बार ए.एन. रॉय साहब ने, मुंबई के कमिश्नर साहब ने कहा था कि नारको टेस्ट करके हमने पकड़ लिया है मुंबई के ब्लास्ट वालों को, इस पर बड़ी तालियां बजी थीं, तो मैंने पूछा कि नारको टेस्ट से क्या सब काम हो गया, वे बोले कि सब काम हो गया। मैंने कहा कि नारको टेस्ट हमने भी टेलीविजन पर देखा था किसी का हुआ था, तेलगी

4.00 P.M.

का हुआ था और तेलगी ने नाम लिया था, मैं नहीं कहता कि सही है या गलत है, लेकिन पूरी दुनिया ने देखा था कि तेलगी ने कई लीडरों का नाम लिया था, वह सही है या गलत, आप उसका फैसला कीजिए, लेकिन आपकी हिम्मत नहीं है उसकी इंक्वायरी करने की, आप उन लोगों की इंक्वायरी कर रहे हैं जो बेकसूर हैं, जो गरीब और मुफलिस हैं, जिन्होंने जान देकर मयकदे की आबरू रख ली, वही अब कतरे-कतरे के लिए तरसाए जाते हैं।

मैं बड़े अदब के साथ होम मिनिस्टर साहब से कहना चाहता हूं कि मुंबई में मेरे साथ बड़ा जुल्म और ज्यादती हुई थी, मैंने कोई गलती नहीं की थी, मेरे जो लोग मार खाए थे, उन्हीं को जेल में डाल दिया गया, उन्हीं पर मुकदमा किया गया। मैंने इसी पार्लियामेंट में एक साल पहले दिसंबर में यह मामला उठाया था कि इसकी इंक्वायरी कराई जाए, लेकिन कहा जा रहा है कि महाराष्ट्र सरकार इंक्वायरी नहीं कराती, तो मैं क्या करूं? यह कोई कानून है? यहां जंगल राज चल रहा है, कोई पूछने वाला नहीं है। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि आज SIMI पर पाबंदी लगी है, लगाइए, हम मना नहीं करते हैं। SIMI पर पाबंदी इसलिए लगाई गई है क्योंकि SIMI के लोग यह कहते हैं कि हम इस मुल्क का कांस्टीट्यूशन नहीं मानते। वे कहते हैं कि हम इस मुल्क में इस्लामिक राज लाना चाहते हैं। मैंने किसी से डिस्कशन किया तो उन्होंने कहा कि यही उनकी गलती है, मैंने कहा कि ठीक है, अगर आपके पास कोई ऐसी रिपोर्ट है तो आप जरूर उन पर पाबंदी लगाइए, लेकिन मैं खुलेआम कहता हूं कि कुछ लोग हैं RSS के जो दीवारों पर लिखते हैं इस देश में ...(व्यवधान)...

श्री जयन्ती लाल बरोट (गुजरात): RSS की बात छोड़िए ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी : बात सुनिए ...(व्यवधान)... वे दीवारों पर खुलेआम लिख रहे हैं, चोरी-छिपे नहीं लिख रहे हैं, वे लिख रहे हैं कि हम इस देश को हिंदू राष्ट्र बनाएंगे ...(व्यवधान)... आपको मैं समझा रहा हूं ...(व्यवधान)... अच्छा, आप कह दीजिए कि नहीं कह रहे हैं वे लोग। वे लोग जो इस देश में भारतवर्ष का झंडा अपने हाथ से नहीं फहराते, वे लोग कहते हैं कि हम इस देश को हिंदू राष्ट्र बना देंगे, वे लोग जो कहते हैं कि मुसलमानों का एक ही स्थान - कब्रिस्तान या पाकिस्तान ...(व्यवधान)... * कानून इस देश में एक होना चाहिए ...(व्यवधान)... मेरा टाइम खत्म हो जाएगा, आप बाद में बात कर लेना ...(व्यवधान)... देखिए, आज internal security पर बहस हो रही है ...(व्यवधान)... सच्चाई सुन लो, जो सच्चाई है उसे सुन लो...(व्यवधान)...

---

*Not recorded.

شری ابو عاصم اعظمی ''اتر پردیش'' : تھینک یو سر، آپ نے مجھے آج بہت ہی اہم مدے پر بولنے کا موقع دیا ہے، اس کے لئے میں آپ کا بہت شکر گزار ہوں۔ جب سے میں پارلیمنٹ میں آیا ہوں، میں دیکھ رہا ہوں کہ ہر سیشن میں اس مدے پر ڈسکشن ہوتا ہے۔ سر، اس ملک میں سامپردائک دنگے انٹرنل سیکورٹی کے لئے بہت بڑا خطرہ بن چکے ہیں۔ سر، آزادی کے بعد اس ملک میں ۱۳۰۰۰ سامپردائک دنگے ہوئے۔ ایک سینئر آئی پی ایس آفیسر وبھوتی نارائن جی کی سرچ کے مطابق 85% ہر دنگے میں ایک ہی سمودائے کے الپ سنکھیک لوگوں کی جائداد برباد کر دی گئی، انہیں مارا گیا اور پولیس نے بھی انہیں کو گرفتار کیا۔ سر، میں بڑے ہی افسوس کے ساتھ یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ہم اس ملک میں رہتے ہیں اور اس ملک میں ٹیررزم ختم ہونا چاہئے، نفرت ختم ہونی چاہئے۔ ہم ہمیشہ دیکھتے ہیں کہ War against terrorism کے لئے نئے نئے قانون بنائے جاتے ہیں، اس کے لئے باتیں ہوتی ہیں، خصوصی عدالت بنائی جاتی ہے، خصوصی فورس بنائی جاتی ہے، اس کے لئے الگ سے خصوصی فنڈ بنایا جاتا ہے، لیکن war against کمیونلزم کی بات کبھی بھی نہیں کی جاتی ہے۔ فرقہ وارانہ فساد سے نپٹنے کے لئے کوئی قانون نہیں بنایا جاتا، اس کے لئے کوئی خصوصی عدالت یا خصوصی فنڈ سے نپٹنے کے لئے کوئی قانون نہیں بنایا جاتا، اس کے لئے کوئی خصوصی عدالت یا خصوصی فنڈ نہیں بنایا جاتا۔ ابھی میرے اس طرف کے ساتھی کہہ رہے تھے کہ یہ کمیونلزم کوئی بہت بڑا مسئلہ نہیں ہے یا سامپردائک دنگے کوئی بہت بڑا مسئلہ نہیں ہے۔ میں ان کو یاد دلانا چاہتا ہوں کہ ۱۹۸۴ میں سکھ لوگوں کے ساتھ بہت بڑا فساد ہوا تھا، کتنے لوگ مارے گئے تھے، ۱۹۸۹ میں میرٹھ اور ملیانہ میں فساد ہوا تھا، 1992-93 میں ممبئی میں فساد ہوئے تھے، ۲۰۰۲ میں گجرات مین فساد ہوئے تھے، لیکن آج تک ان مجرموں کو سزا نہیں مل سکی، ممبئی فساد مین ۲۵۰۰ افراد کا قتل ہوا، انہیں مارا گیا، تو کیا یہ دہشت گردی نہیں ہے؟ یہ ملیٹنسی نہیں ہے؟ یہ ٹیررزم نہیں ہے؟ لیکن ۷۲۴ لوگوں کو بم بلاسٹ سے مارا گیا تو وہ ٹیررزم ہے، وہ دہشت گردی ہے۔ گجرات میں ۲۰۰۲ میں ۳۰۰۰ لوگوں کا قتل کر دیا گیا، یہ دہشت گردی نہیں ہے؟ لیکن ٹرین میں صرف

†Transliteration in Urdu Script.

80-85 لوگ جلا دئے گئے، تو یہ ٹیررزم ہے۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اس طرح سے وایولینس کی الگ الگ کیٹگری بنا کر کے، انٹرنل سیکورٹی کو ایک بہت بڑا خطرہ ہو رہا ہے۔ ملک کا قانون سب کے لئے ایک ہی طرح کا بنایا گیا ہے، چاہے آسمان کی اونچائی پر بیٹھا ہوا شخص ہو یا زمین پر بھیک مانگنے والا کوئی شخص ہو، سب کے لئے ایک طرح کا قانون بنایا گیا ہے، لیکن اس ملک میں الگ الگ قانون چل رہا ہے۔ سر، میں آزادی کے وقت تو نہیں تھا، لیکن میں نے کتابوں میں پڑھا ہے کہ آزادی کے پہلے جب اس ملک میں انگریزوں کی حکومت تھی، تب ہم غلام تھے، ہمارے باتیں سنی نہیں جاتی تھیں، ہمارے ساتھ اس ملک میں ظلم اور زیادتی ہوتی تھی اس وقت جب اس ملک کے اندر منگل پانڈے کو پھانسی دی گئی تھی، تو اس ملک کے نوجوان سڑک پر اتر آئے تھے اور ۱۸۵۷ کے غدر میں، جب سب نوجوان سڑک پر اتر آئے تو ۱۸۶۰ میں پولیس ایکٹ بنایا گیا۔ اس وقت انگریزوں کی سرکار تھی اور جنتا ہندستان تھی، وہ جنتا بھارت ورش کی تھی۔ انگریزوں کی سرکار کے ذریعہ بھارت ورش کی جنتا کے لئے ۱۸۶۰ میں پولیس ایکٹ بنایا گیا اور انگریزوں کو ڈنڈا پکڑا دیا گیا کہ وہ لوگ جتنا چاہیں ہندوستانیوں کا ڈنڈا ماریں، لیکن یہ ہندستانی پولیس سے ڈنڈا کھینچ کر اسے مار نہیں سکتی ہے۔ کیا آج اس سے کچھ الگ ہو گیا ہے؟

سر، ۱۹۴۷ میں انگریز چلے گئے، لیکن میں کہنا چاہتا ہوں کہ آج اس دیش کے اندر اس سے بری دشا ہے۔ سر، میں بہت دکھی دل کے ساتھ کہنا چاہتا ہوں کہ ہمیں اس دیش میں اودھم سنگھ، شہید بھگت سنگھ اور اشفاق اللہ نے اپنی جان دے کر راستہ دکھایا تھا، آج ظلم و زیادتی بڑھتی جا رہی ہے اور بہت سے نوجوان اس راستے پر جا رہے ہیں۔ جب ظلم اور ناانصافی بڑھتی ہے، تو آتنک واد جنم لیتا ہے۔ آج میں پوچھنا چاہتا ہوں، یہاں ہوم منسٹر صاحب بیٹھے ہیں، اس لئے میں کھل کر بات کرنا چاہتا ہوں ان سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا اس ملک میں دو طرح کا قانون چلیگا؟ میں آپ کو بتا دوں، یہاں پر ڈاکٹر فاروق عبداللہ صاحب بیٹھے ہیں، ممبئی میں بلاسٹ ہوئے، اسی وقت سے مسلمانوں کا نام لیا جانے لگا۔ اس کے بعد سے جو گرفتاریاں ہوئی ہیں، میں روزانہ

اخبارات میں پڑھ رہا ہوں کہ بڑے بڑے جو علمائے کرام ہیں، جو نماز پڑھاتے ہیں، حدیث کی تعلیم دیتے ہیں، جو غلط نہیں بول سکتے، وہ قرآن شریف ہاتھ میں لیکر قسم کھا رہے ہیں کہ غلط لوگوں کو گرفتار کیا جا رہا ہے۔ ایک کشمیری اپنی انکوائری کے لئے کشمیر چھوڑ کر آیا تھا اور ممبئی کے گیسٹ ہاؤس میں تھا، اس کو گیسٹ ہاؤس سے گرفتار کیا گیا اور اس کے بعد پولیس اسٹیشن میں بیٹھا کر اس کو دو دن تک مارا گیا۔ جب اس کے کمرے کی تلاشی لی گئی تو اس کے پاس بیس ہزار روپے ملے، انہوں نے کہا کہ روپے دے دو۔ اس نے کہا کہ صاحب میں کشمیر سے چلکر کسی کام کے لئے آیا ہوں، میرا روپیہ آپ لے لیں گے تو میں کیسے کام کرونگا؟ پھر اس سے دس ہزار روپے لے لئے۔ میں آپ کو ایک دوسرا قصہ بتا رہا ہوں۔

آج انٹرنل سیکورٹی کی یہ سب سے بڑی پرابلم حل نہیں ہوگی تو آپ پوری ممبئی، پورے ہندوستان میں سیکورٹی بڑھا دیں، میں دعوے کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ یہ مسئلہ کا حل نہیں ہو سکتا. ایک آدمی کو کرلا کے اندر پکڑا گیا. اس کی غلطی یہ تھی کہ سمی کے آفس کے باہر کیلے کی گاڑی لگاتا تھا. اس سے پوچھا کہ سمی والا کہاں رہتا ہے. اس نے کہا کہ مجھے نہیں معلوم. اسے پکڑ کر لے گئے اور پولیس والوں نے اپنی چپل نکال کی، اس کے منہ کو پھاڑ کر اندر ڈال دی اور کہا کہ اگر یہ چپل گر گئی تو اس میں پاخانہ لگا کر تمہارے منہ میں ڈال دوں گا. میں ساری چیزیں لے کر گیا. یہاں ممبئی سے لے کر آیا. ایک عورت، بیچاری جو برقعہ پہنتی تھی، اس کا برقعہ کھینچ لیا گیا، کہا کہ تم برقعہ اتارو، اس نے کہا کہ میں برقعہ نہیں اتاروں گی. اس کا برقعہ اتار کر، پیر میں لپیٹ کر دکھایا کہ، دیکھو تمہاری عزت. دو پڑھے لکھے نوجوانوں کو گرفتار کیا گیا. اگر وہ غلط ہے تو انہیں پھانسی کی سزا دیجئے. اسے کوئی روکنے والا نہیں ہے. لیکن انہیں پولیس اسٹیشن میں بٹھا کر، اس کے باپ کے سامنے اس کے پورے کپڑے اتار دئے گئے اور کہا گیا کہ اس بات کو تم قبول کرلو، نہیں تو تمہاری کتنی عزت ہے، یہ میں تمہیں ابھی بتا دوں گا. میں ایسی چیزیں لے کر پارلیمنٹ کے اندر آیا. میں نے پرائم منسٹر سے بات کی، یہاں سے پندرہ لوگوں کا ڈیلی گیشن ممبئی بھیجا گیا، لیکن آج تک اس کی کوئی انکوائری نہیں

ہوئی. کیا اس دیش میں دو طرح کا قانون چلے گا؟ میں آپ کو بتا دوں ممبئی میں گھاٹ کوپر کے دوشی لوگوں کو نچلے کورٹ سے ضمانت مل گئی. نچلی کورٹ سے ضمانت ملنے کے بعد پولیس نے اگلی کورٹ میں جا کر اس کی ضمانت کینسل کروادی. چار مہینے کے بعد پھر ممبئی میں گھاٹ کوپر میں جا کر جو بس میں بلاسٹ ہوا تھا، سارے لوگ نردوش چھوٹ گئے اور پھر اسی پولیس نے اگلی کورٹ میں جا کر ان کی ضمانت کینسل کروا کر جیل میں ڈال دیا. اس کے بعد ایک نوجوان، اسی گروپ کا تھا، خواجہ یونس، اس کو انکوائری کے نام پر مار دیا گیا. مارنے کے بعد ایک پولیس والا گرفتار ہوتا ہے اور گرفتار ہونے کے بعد نچلی عرالت سے، میٹروپولیٹن مجسٹریٹ کی عدالت سے ۳۰۲ کے مقدمے میں رہا ہو جاتا ہے. لیکن ایک سال سے زیادہ ہو گیا، آج تک یہ پولیس اور یہ سرکار اگلی عدالت میں اس کی بیل کینسلیشن کے لئے نہیں گئی.

سر، کیا یہ انصاف اس سرزمیں میں ہے کیا؟ اس سرزمیں پر انصاف ختم ہو چکا ہے؟ امر سنگھ جی کو میں نے بلایا کہ آپ آیئے، مہاراشٹر سرکار ہماری بات نہیں سنتی، آپ آیئے. اس کی ماں نے چیف منسٹر سے دامن پھیلا کر کہا کہ ولاس راؤ دیش مکھ، تم میرے زندہ بیٹے کو نہیں دے سکتے، تم میرے مرے بیٹے کی لاش میرے دامن میں ڈال دو، میں اسے نہلا دھلا کر قبرستان میں ڈال دوں گی، لیکن آج تک اس کے بیٹے کی لاش نہیں ملی ہے. مہاراشٹر میں ہائی کورٹ آج کہہ رہا ہے. کہاں چلے گئے ہوم منسٹر صاحب، بیٹھے ہیں، میں کہنا چاہتا ہوں کہ یہ ملک قانون سے چلے گا یا کسی کی (*) سے چلے گا. آج ہائی کورٹ کہہ رہا ہے کہ خواجہ یونس کے قتل میں ملوث گیارہ پولیس والوں کو ممبئی سے ٹرانسفر کرو. مگر آج میں دیکھ رہا ہوں کہ جنگل راج ہے اس کا ٹرانسفر نہیں ہو رہا ہے. آج آپ نے دیکھا کہ ممبئی بلاسٹ کے لوگوں کو سزا مل رہی ہے. ضرور سزا دیجئے، جنھوں نے بلاسٹ کیا ہے، لیکن یہ میں نہیں کہہ رہا ہوں، یہ شری کرشنا کمیشن نے کھلے عام لکھا ہے کہ بابری مسجد کی شہادت، ممبئی کے جھگڑے، ممبئی کے فسادات کی وجہ سے ممبئی میں یہ بلاسٹ ہوا. سزا دیجئے، لیکن آپ انہیں سزا نہیں دیں گے. آپ کو ان کو بھی سزا دینی پڑے گی جن کی وجہ سے یہ

(*) Expunged as ordered by the Chair.

ہوا ہے ''تم نے ہر کھیت میں انسان کے سر بوئے ہیں، زمیں خون اگلتی ہے تو شکوہ کیسا''. آج ہم سماجوادی پارٹی چلاتے ہیں، ہمارے پاس پندرہ سے سولہ ایم. پی. یہاں پر ہیں، اکتالیس ممبر آف پارلیمنٹ وہاں پر ہیں. اس دیش کے ۱۰۳ کروڑ لوگوں میں سے ۲۰ کروڑ لوگوں پر ملائم سنگھ یادو کی سرکار چلتی ہے. امر سنگھ اور ملائم سنگھ جی کو میں ممبئی بلا رہا ہوں تو وہاں کی سرکار نے ابو عاصم کی میٹنگ کو کینسل کروا دیا نہ اپنا چار روز دورہ ریلی ابو عاصم نہیں کر سکتے. ۲۷ اکتوبر کو اتر پردیش کی سرکار نے مہاراشٹر کو پرمیشن کے لئے پیپر بھیج دیا، کہ ۲۱ نومبر کو ملائم سنگھ یادو جی شواجی پارک میں میٹنگ کریں گے. آپ کو پتہ ہے کہ صرف دو دن پہلے مجھے کہا گیا کہ لاء اینڈ آرڈر کی پرابلم ہے، آپ میٹنگ نہیں کر سکتے. میں نے دیکھا کہ اسی دن گیٹ وے آف انڈیا پر ولاس راؤ دیش مکھ جی میٹنگ کر رہے ہیں. کورٹ نے کہا کہ میٹنگ نہیں کر سکتے. میں کورٹ میں گیا، اس کے بعد بھی میٹنگ ہوگئی. ابو عاصم میٹنگ نہیں کر سکتے، اس لئے کہ خیر لانجی میں دلتوں کو مار دیا گیا ہے. دلتوں کو خیر لانجی میں مارنے کی وجہ سے آٹھ سو، نو سو کلو میٹر دور تک ممبئی میں میٹنگ نہیں ہو سکتی. میں ان سے کہوں کہ یہ بہت بات کرتے ہیں کہ فرقہ پرستوں سے لڑ رہے ہیں، لیکن نریندر مودی کی میٹنگ اسی ناگپور سے، جہاں سے سو کلو میٹر دور خیر لانجی ہے، وہاں اس کی میٹنگ ہو سکتی ہے. اگر اس طرح سے اس ملک میں ڈسکریمینیشن ہوگا تو میں دعوی کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ اس ملک میں ابھی بھی دہشت گردی ختم نہیں ہو سکتی.

سر، میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں، آپ اس بات کو نوٹ کیجئے کہ مہاراشٹر میں، مالے گاؤں میں گنپتی کا تہوار چل رہا تھا. گنپتی کے تہوار میں مالے گاؤں کے ہر مندر کے اندر بیس بیس پولیس والے آ کر لے کر ایک ایک آدمی کو چیک کر رہے تھے. اس کے بعد وہ گنپتی کے منڈل میں جا سکتے تھے.

دو دن کے بعد گن پتی اتسو ختم ہو گیا اور شب برات آئی۔ اسی مہینے کی ۳ تاریخ کو وہاں کے ایس پی، وہاں کے پولیس والے اس قبرستان میں، جہاں پر یہ بلاسٹ ہوا تھا، وہاں آئے اور کہا

کہ ہمارے پاس خبر ہے کہ کچھ فقیروں کے ذریعہ یہاں گڑبڑ ہو سکتی ہے۔ انہوں نے کہا کہ یہ جو پھول بیچنے والے قبرستان میں آتے ہیں، اگربتی والے آتے ہیں، فقیر لوگ آتے ہیں، اب کی بار ان سب کو پولیس، قبرستان کے گیٹ سے ڈیڑھ سو میٹر دور رکھیگی۔ انہوں نے کہا کہ ٹھیک ہے، ایسا کریے۔ اس قبرستان پر آج سے نہیں، پچھلے کئی سالوں سے ہر جمعہ کے دن پولیس کی وین کھڑی ہوتی ہے۔ آپ کو پتہ ہے کہ اس بار سیکورٹی کا کتنا بڑا lapse ہوا ہے؟ وہاں پر اس دن پولیس نے کہا کہ ہم ان کو گیٹ سے دور رکھیں گے اور پولیس وہاں سے ندارد تھی۔ وہ کہہ کر گئے کہ اب کی بار لوگ یہاں سے ڈیڑھ سو میٹر دور رہیں گے، لیکن وہاں پر کوئی نہیں آیا، صرف دو ہوم گارڈ بھیج دئے گئے۔ پہلے وہاں پولیس کی وین رہتی تھی، لیکن اس بار پولیس کی وین وہاں پر نہیں تھی۔ میں اپ کو یہ بھی بتادوں، یہ میں نہیں کہہ رہا ہوں، وہ لوگ کہہ رہے ہیں، علماء کرام، جو یونیورسٹی سے پڑھ کر آئے ہیں، جو آج تعلیم دے رہے ہیں عربی کی، جو قرآن شریف کی تعلیم دے رہے ہیں، وہ کبھی جھوٹ نہیں بول سکتے، ان کا بیٹا نہیں پکڑا گیا ہے، لیکن وہ کہہ رہے ہیں کہ اس وقت جب لاشیں مل رہی تھیں، تو ان میں ایک لاش ایسی تھی جس کی داڑھی نقلی تھی اور وہ لاش تھوڑی دیر کے بعد غائب ہوگئی۔ اس کی انکوائری ہونی چاہئے۔ ہوسکتا ہے کہ یہ بات غلط ہو۔ میں ایسا نہیں کہہ رہا ہوں کہ یہ بات صحیح ہے۔ بار بار اے.این.رائے صاحب نے، ممبئی کے کمشنر صاحب نے کہا تھا کہ نارکوٹسٹ کر کے ہم نے پکڑ لیا ہے ممبئی کے بلاسٹ والوں کو، اس پر بڑی تالیاں بجی تھیں، تو میں نے پوچھا کہ نارکوٹسٹ سے کیا سب کام ہوگیا، وہ بولے کہ سب کام ہوگیا۔ میں نے کہا کہ نارکوٹسٹ ہم نے بھی ٹیلی ویژن پر دیکھا تھا کسی کا ہوا تھا، جیلگی کا ہوا تھا اور جیلگی نے نام لیا تھا، میں نہیں کہتا کہ صحیح ہے یا غلط ہے، لیکن پوری دنیا نے دیکھا تھا کہ جیلگی نے کئی لیڈروں کا نام لیا تھا، وہ صحیح ہے یا غلط، آپ اس کا فیصلہ کیجئے، لیکن آپ کی ہمت نہیں ہے اس کی انکوائری کرنے کی، آپ ان لوگوں کی انکوائری کر رہے ہیں جو بے قصور ہیں، جو غریب اور مفلس ہیں، جنہوں نے جان دیکر مئے کدے کی آبرو رکھ لی، وہی اب قطرے قطرے کے لئے ترسائے جاتے ہیں۔

[ ] میں بڑے ادب کے ساتھ ہوم منسٹر صاحب سے کہنا چاہتا ہوں کہ ممبئی میں میرے ساتھ بڑا ظلم اور زیادتی ہوئی تھی، میں نے کوئی غلطی نہیں کی تھی، میرے جو لوگ مار کھائے تھے، انہیں کو جیل میں ڈال دیا گیا، انہیں پر مقدما کیا گیا، میں نے اسی پارلیمنٹ میں ایک سال پہلے دسمبر میں یہ معاملہ اٹھایا تھا کہ اس کی انکوائری کرائی جائے، لیکن کہا جا رہا ہے کہ مہاراشٹر سرکار انکوائری نہیں کراتی، تو میں کیا کروں؟ یہ کوئی قانون ہے؟ یہاں جنگل راج چل رہا ہے، کوئی پوچھنے والا نہیں ہے۔ اس لئے میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ آج سیمی پر پابندی لگی ہے، لگایئے، ہم منع نہیں کرتے ہیں۔ سیمی پر پابندی اس لئے لگائی گئی ہے کیوں کہ سیمی کے لوگ یہ کہتے ہیں کہ ہم اس ملک کا کانسٹی ٹیوشن نہیں مانتے۔ وہ کہتے ہیں کہ ہم اس ملک میں اسلامک راج لانا چاہتے ہیں۔ میں نے کسی سے ڈسکشن کیا تو انہوں نے کہا کہ یہی ان کی غلطی ہے، میں نے کہا کہ ٹھیک ہے، اگر آپ کے پاس کوئی ایسی رپورٹ ہے تو آپ ضرور ان پر پابندی لگایئے، لیکن میں کھلے عام کہتا ہوں کہ کچھ لوگ ہیں آر ایس ایس کے جو دیواروں پر لکھتے ہیں اس دیش میں.....مداخلت....

شری جینتی لال بروٹ: آر ایس ایس کی بات چھوڑیئے .....مداخلت...

شری ابوعاصم اعظمی: بات سنئے...مداخلت..وہ/ دیواروں پر کھلے عام لکھ رہے ہیں، چوری چھپے نہیں لکھ رہے ہیں، وہ لکھ رہے ہیں کہ ہم اس دیش کو ہندو راشٹر بنائیں گے...مداخلت.. آپ کو میں سمجھا رہا ہوں...مداخلت.. اچھا، آپ کہہ دیجئے کہ نہیں کہہ رہے ہیں وہ لوگ۔ وہ لوگ جو اس دیش میں بھارت ورش کا جھنڈا اپنے ہاتھ سے نہیں پھہراتے، وہ لوگ کہتے ہیں کہ ہم اس دیش کو ہندو راشٹر بنا دیں گے، وہ لوگ جو کہتے ہیں کہ مسلمانوں کا ایک ہی استھان۔ قبرستان یا پاکستان ...مداخلت...* قانون اس دیش میں ایک ہونا چاہئے..مداخلت..میرا ٹائم ختم ہو جائے گا، آپ بعد میں بات کر لینا..مداخلت.. دیکھئے، آج انٹرنل سیکورٹی پر بحث ہو رہی ہے سچائی سن لو، جو سچائی ہے اسے سن لو.....مداخلت.... [

---

* Not recorded.

श्री रुद्रनारायण पाणि : आप क्या कहना चाह रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी) : आप लोग बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... पाणि जी, आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... उनकी बात खत्म हो रही है, आप बैठ जाइए ...(**व्यवधान**)... Azmi ji, please conclude. ...*(Interruptions)*... Please conclude. ...*(Interruptions)*...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : यह क्या बात है ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Let me handle this. ...*(Interruptions)*... देखिए, उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं कही है ...(**व्यवधान**)... अहलुवालिया जी, प्लीज़ मेरी बात सुन लीजिए ...(**व्यवधान**)... आज़मी साहब, एक मिनट जरा बैठिए, I personally feel that he has not said anything which is unparliamentary. Let him finish. You can refute when your turn comes. Azmi*ji*, please conclude.

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, मैं कहना चाहता हूँ कि पुलिस ने गोली चलाई, दो लोग मार दिए गए ...(**व्यवधान**)...

شری ابوعاصم اعظمی : سر، میں کہنا چاہتا ہوں کہ پولیس نے گولی چلائی، دو لوگ مار دیے گئے ...مداخلت...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Azmiji, please conclude...*(Interruptions)*...

श्री एस. एस. अहलुवालिया : अनपार्लियामेंटरी की बात नहीं है। सिमी एक banned organisation है, उसके साथ ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी) : अहलुवालिया जी, आपकी बात समझ में आई ...(**व्यवधान**)... आज़मी जी, एक मिनट ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी : मेरा यह कहना है कि अगर कोई टेरोरिस्ट आर्गेनाइजेशन है ...(**व्यवधान**)...

شری ابوعاصم اعظمی : میرا یہ کہنا ہے کہ اگر کوئی ٹیریزم آرگنائزیشن ہے...مداخلت...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): आज़मी जी, एक मिनट ...(**व्यवधान**)... Let me also please clarify, उनका objection यही है कि सिमी एक

†Transliteration in Urdu Script.

banned organisation है, उसकी comparison किसी दूसरी organisation के साथ, जो banned नहीं है, वह शायद नहीं हो सकती।

श्रीमती वृंदा कारत : सर, इसका क्या मतलब है ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Let him finish. आज़मी जी, प्लीज़ आप अपनी बात खत्म कीजिए ...**(व्यवधान)**... I have already clarified. Now, there is no issue and nothing else is going on record. Please, conclude....*(Interruptions)*... Please, conclude.

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, मैं बड़े अदब के साथ और ...**(व्यवधान)**... गृह मंत्री जी का समय बर्बाद नहीं होने देना चाहता हूँ ...**(व्यवधान)**... मुझे समय मिला है ...**(व्यवधान)**... देखिए, इसको इश्यू मत बनाइए ...**(व्यवधान)**...

شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں بڑے ادب کے ساتھ اور...مداخلت...گرہ منتری جی کا سے برباد نہیں ہونے دینا چاہتا ہوں...مداخلت...مجھے سے ملا ہے...مداخلت...دیکھئے، اس کو ایشو مت بنایئے...مداخلت...

श्री रुद्रनारायण पाणि : *

श्री जयन्ती लाल बरोट : *

श्री विजय कुमार रूपाणी : *

श्री एस. एस. अहलुवालिया : *

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI):: Please, conclude...*(Interruptions)*... Let him conclude.. आप मेहरबानी करके इनको बोलने दीजिए ...**(व्यवधान)**... Let him finish. यह क्या हो रहा है ...**(व्यवधान)**... आप एक मिनट चुप रहेंगे ...**(व्यवधान)**... पाणि साहब, एक मिनट ...**(व्यवधान)**... एक मिनट, एक मिनट ...**(व्यवधान)**... Just one minute...*(Interruptions)*... Let me handle. आज़मी साहब, आज ज़रा इस बात का क्लैरिफिकेशन कर दीजिए, ताकि हंगामा न हो और पार्लियामेंट चले। Please clarify this. ...**(व्यवधान)**... एक मिनट, उनको बोलने दीजिए न ...**(व्यवधान)**... पाणि जी, वह हमने कह दिया ...**(व्यवधान)**... उनकी बात पूरी करने दीजिए ...**(व्यवधान)**... आप अपनी बात पूरी कर लीजिए ...**(व्यवधान)**... You can't do that, Mr. Pany. Please, go back to your seat. आप अपनी सीट पर जाइए ...**(व्यवधान)**... आप अपनी सीट पर जाइए ...**(व्यवधान)**... वे क्लैरिफिकेशन कर रहे हैं

---

†Transliteration in Urdu Script.
*Not recorded.

...(व्यवधान)... आप पहले अपनी सीट पर जाइए ...(व्यवधान)... Let him finish. I cannot hear everyone in this din. मैंने वह कह दिया कि यह comparison नहीं हो सकती ...(व्यवधान)... हम रेकार्ड देख लेंगे ...(व्यवधान)... पाणि साहब, एक मिनट ...(व्यवधान)... हम रेकार्ड देख लेंगे ...(व्यवधान)... जो बात अनुचित है, वह रेकार्ड में नहीं जाएगी and the matter is over. Please take your seats. ...(व्यवधान)... अहलुवालिया जी, हम रेकार्ड देख लेंगे, जो अनुचित है, वह रेकार्ड में नहीं जाएगी ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, मैं क्लैरिफिकेशन करता हूँ कि ...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں کلیریفکیشن کرتا ہوں کہ...مداخلت...]

श्री उदय प्रताप सिंह (उत्तर प्रदेश): *

श्री एस. एस. अहलुवालिया : *

SHRI ARUN JAITLEY (Gujarat): Sir, I have a point of order.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Tell your people to let you speak. Tell them to go back. Let them go back...*(Interruptions)*... He has a point of order. Let him finish.

SHRI ARUN JAITLEY: Sir, I have a point of order. Exactly the similar statement was made in the last session by the hon. Member, Shri Janeshwar Mishra, who is not present in the House today. The same objection was taken by us and the objection precisely was that one is a banned organisation which has been banned and the ban has been upheld by the Tribunal. The Central Government, even today, continues to ban it. How can you start drawing comparisons of that institution with the RSS? There was a stalemate, and, after that Shri Janeshwar Mishra stood up and had the dignity to withdraw that statement in the House itself. Once this issue has been decided in the last session that comparison between SIMI and RSS on these grounds will not be allowed, Mr. Janeshwar Mishraji withdrew his statement, how can somebody repeat that statement again, and, if he repeats it, he must be prevented and the same procedure must apply and he must withdraw that statement. ...*(Interruptions)*...

---

†Transliteration in Urdu Script.
*Not recorded.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): No, I must have my ruling. ...*(Interruptions)*... Amar Singhji, I must have my ruling. Please. ...*(Interruptions)*...

श्री अमर सिंह : सर, अरुण जेटली जी ने गलत कहा है। उन्होंने कोई तुलना नहीं की है। **...(व्यवधान)...**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Ahluwaliaji, I must have my say. ...*(Interruptions)*...

श्री अरुण जेटली : उस समय जनेश्वर मिश्र जी ने कहा था कि सुषमा जी बहुत नाराज हुई हैं। इस के लिए उन्होंने एक प्रकार से सुषमा जी के प्रति व्यक्तिगत gesture भी उस वक्त रखा था और कहा था कि मैं अपना वक्तव्य वापिस लेता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): No, no. ...*(Interruptions)*... आप बैठ जाइये, प्लीज ... have to give my ruling. Please sit down. I have to give my ruling. ...*(Interruptions)*...

श्री उदय प्रताप सिंह : सर, उन्होंने जो बात रखी थी **...(व्यवधान)...**

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): आप मेरी बात सुन लीजिए, उस के बाद आप को मौका मिलेगा। Hon. Member, Shri Arun Jaitleyji has raised a point, and, I remember that last time there was a stalemate on a similar issue. So, may be you want to clarify, if you have compared, which I had mentioned in my remarks. If you have compared a banned organisation with some organisation which is not banned, that will not go on record. And, last time...*(Interruptions)*... Its not going on record and he has withdrawn it. So, please carry on further. आप उन को carry on करने दीजिए। Let him carry on. ...*(Interruptions)*... Please carry on. Brindaji, please let him carry on. I have already given my ruling. ...*(Interruptions)*... Please let him carry on.

श्री एस. एस. अहलुवालिया : सर, 5 मिनट तक सिमी के बारे में बोलते रहे **...(व्यवधान)...** सिमी की पैरवी कर रहे हैं। **...(व्यवधान)...**

श्री अमर सिंह : उन्होंने कहा था कि जरूरत है तो ban कर दीजिए।

श्री एस. एस. अहलुवालिया : वह banned है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Amar Singhji, the matter is over. ...*(Interruptions)*... The matter is over. Azmiji, please conclude now. The matter is settled now. Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI AMAR SINGH: Sir, he is misleading the House. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): I think, the matter is settled. Azmiji, please conclude now....*(Interruptions)*... The matter is settled. Please conclude...*(Interruptions)*...

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, वे कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती, हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम। सर, यह क्या है? सर, मैं तो एक मज़लूम कौम का एक मज़लूम नुमाइंदा बोल रहा हूं

شری ابو عاصم اعظمی : سر، یہ قتل بھی کرتے ہیں تو چرچا نہیں ہوتی، ہم آہ بھی کرتے ہیں تو ہو جاتے ہیں بدنام. سر، یہ کیا ہے؟ سر، میں تو ایک مظلوم قوم کا ایک مظلوم نمائندہ بول رہا ہوں.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Azmiji, please conclude. Please conclude.

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, मैंने दीवारों पर पढ़ा है, ''इस देश को हिंदू राष्ट्र बनाना है।'' सर, हमारे पुरखों, जिन्होंने इस मुल्क को आजाद कराया था और अपनी जान की बाजी दी थी, यदि कोई आत्मा नाम की चीज होगी, तो गांधी जी की आत्मा खून के आंसू रोती होगी कि मैंने जिस देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राण दिए, उस देश में कैसे नफरत फैलाने वाले लोग आ गए हैं? ...*(Time-bell)*...

شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں نے دیواروں پر پڑھا ہے، ''اس دیش کو ہندو راشٹر بنانا ہے''. سر، ہمارے پرکھوں، جنہوں نے اس ملک کو آزاد کرایا تھا اور اپنی جان کی بازی دی تھی، اگر کوئی آتما نام کی چیز ہوگی تو گاندھی جی کی آتما خون کے آنسو روتی ہوگی کہ میں نے جس دیش کو آزاد کرانے کے لئے اپنے پران دے، اس دیش میں کیسے نفرت پھیلانے والے لوگ آ گئے ہیں؟ .....(وقت کی گھنٹی).....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Thank you very much. Now, you please conclude.

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, मैं होम मिनिस्टर साहब से कहना चाहता हूं कि मैं बहुत दुखी हूं। हम इसी मुल्क में रहते हैं और हमें इस बात का बहुत फख्र है। ...(व्यवधान)...

†Transliteration in Urdu Script.

मैं हमेशा इस बात को कहता हूं ...(व्यवधान).. होम मिनिस्टर साहब, आप इस बात को समझ लीजिए।

شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں ہوم منسٹر صاحب سے کہنا چاہتا ہوں کہ میں بہت دکھی ہوں. ہم اسی ملک میں رہتے ہیں اور ہمیں اس بات کا بہت فخر ہے ...مداخلت... میں ہمیشہ اس بات کو کہتا ہوں...مداخلت...ہوم منسٹر صاحب، آپ اس بات کو سمجھ لیجئے.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): आप मेहरबानी कर के conclude कीजिए।

श्री अबू आसिम आज़मी : होम मिनिस्टर साहब, वहां गलत लोग गिरफ्तार हो रहे हैं। ऐसे लोग गिरफ्तार हो रहे हैं जिन के पास मालेगांव से मुंबई जाने के लिए किराया तक नहीं है। यह मैं नहीं कह रहा हूं। आज इसी दिल्ली में 28 से 30 लोग भाग रहे हैं और सिर्फ यही कह रहे हैं कि सी0बी0आई0 इंक्वायरी करा दो।

شری ابو عاصم اعظمی : ہوم منسٹر صاحب، وہاں غلط لوگ گرفتار ہو رہے ہیں۔ ایسے لوگ گرفتار ہو رہے ہیں جن پاس مالیگاؤں سے بمبئی جانے کے لئے کرایہ تک نہیں ہے۔ یہ میں نہیں کہہ رہا ہوں۔ آج اسی دلی میں ۲۸ سے ۳۰ لوگ بھاگ رہے ہیں اور صرف یہی کہہ رہے ہیں کہ سی بی آئی انکوائری کرادو۔†

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): You please conclude. ...*(Interruptions)*... Azmiji, please conclude now. *(Time-bell)* Next speaker, Shri Abani Roy.

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, मैं सिर्फ दो मिनट लूंगा। आज खैरलांजी में दलितों को मारा गया और हमने आवाज उठाई और सी0बी0आई0 इंक्वायरी मान ली गयी, लेकिन मालेगांव और मुंबई की सी0बी0आई0 इंक्वायरी क्यों नहीं मानी जाती? ...*(Time-bell)*...

شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں صرف دو منٹ لونگا۔ آج خیرلانجی میں دلتوں کو مارا گیا اور ہم نے آواز اٹھائی اور سی بی آئی انکوائری مان لی گئی، لیکن مالیگاؤں اور ممبئی کی سی بی آئی انکوائری کیوں نہیں مانی جاتی۔

.....(وقت کی گھنٹی).....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Thank you very much, आज़मी जी, बहुत-बहुत शुक्रिया। श्री अवनि राय।

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, हम यह डिमांड करना चाहते हैं कि इस इंक्वायरी से दूध का दूध और पानी का पानी जनता के सामने आना चाहिए।

شری ابو عاصم اعظمی : سر، ہم یہ ڈیمانڈ کرنا چاہتے ہیں کہ اس انکوائری سے دودھ کا دودھ اور پانی کا پانی جنتا کے سامنے آنا چاہئے۔

---

†Transliteration in Urdu Script.

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): श्री अवनि राय।

श्री अबू आसिम आज़मी : अरे भाई, मैं आप से कहां कह रहा हूं? मैं तो होम मिनिस्टर साहब से कह रहा हूं। सर, मैं एक बात कह दूँ ...**(व्यवधान)**...

†[**شری ابوعاصم اعظمی** : ارے بھائی، میں آپ سے کہاں کہہ رہا ہوں؟ میں تو ہوم منسٹر صاحب سے کہہ رہا ہوں سر، میں ایک بات کہہ دوں.....مداخلت....]

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): आप कंक्लूड कीजिए।...**(व्यवधान)**... आपने बहुत बात कह दी।...**(व्यवधान)**...

श्री अबू आसिम आज़मी : सिर्फ दो मिनट, सर।...**(व्यवधान)**... सर, भिवंडी में एक कब्रिस्तान की जमीन पर पुलिस स्टेशन बन रहा था। इसके लिए लोगों ने आवाज लगाई कि इसको मत बनने दीजिए। इस पर गोली चली, जिसमें 2 लोग मार दिए गए। 2 लोगों के मारने के बाद वहाँ की सरकार ने अनाउंस किया...**(व्यवधान)**...

†[**شری ابوعاصم اعظمی** : صرف دو منٹ، سر.....مداخلت.... سر، بھونڈی میں ایک قبرستان کی زمین پر پولیس اسٹیشن بن رہا تھا۔ اس کے لئے لوگوں نے آواز لگائی کہ اس کو مت بننے دیجئے۔ اس پر گولی چلی، جس میں دو لوگ مار دئے گئے۔ دو لوگوں کے مارنے کے بعد وہاں کی سرکار نے اناؤنس کیا.....مداخلت....]

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): आप बैठिए, प्लीज़। ...**(व्यवधान)**... आजमी जी, प्लीज़ कन्क्लूड ...**(व्यवधान)**...

श्री अबू आसिम आज़मी : इसके बाद दो लोगों को एक-एक लाख रुपए का अनाउंसमेंट हुआ, लेकिन आज तक एक रुपया भी उन लोगों को नहीं मिला, सर, क्योंकि वे मुसलमान हैं! इसका क्या मतलब है? ...**(व्यवधान)**... सर, मैं दो-दो, तीन-तीन बार होम मिनिस्टर साहब के पास जा चुका हूँ, लेकिन आज तक उन्हें एक रुपया भी नहीं मिला। उसके बाद होम मिनिस्टर साहब भिवंडी में कहते हैं कि ...**(व्यवधान)**... अगर भिवंडी में किसी ने पुलिस पर पत्थर मारा, तो गोली मार देना। तीसरे दिन ही इनके जो ...**(व्यवधान)**... साहब हैं न, इनकी पत्नी ...**(व्यवधान)**...

†[**شری ابوعاصم اعظمی** : اس کے بعد دو لوگوں کو ایک ایک لاکھ روپے کا اناؤنسمنٹ ہوا، لیکن آج تک ایک روپیہ بھی ان لوگوں کو نہیں ملا، سر، کیوں کہ وہ مسلمان ہیں۔ اس کا کیا مطلب ہے؟ .....مداخلت.... سر، میں دو دو، تین تین بار ہوم منسٹر صاحب کے پاس جا چکا ہوں، لیکن آج تک انہیں ایک روپیہ بھی نہیں ملا۔ اس کے بعد ہوم منسٹر صاحب بھونڈی میں کہتے ہیں کہ.....مداخلت....اگر بھونڈی میں کسی نے پولیس پر پتھر مارا، تو گولی مار دینا۔ تیسرے دن ہی ان کے جو.....مداخلت.... صاحب ہیں نا، ان کی پتنی .....مداخلت....]

†Transliteration in Urdu Script.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Thank you, very much. ...*(Interruptions)*... Shri Abani Roy. ...*(Interruptions)*.... Shri Abani Roy. ...*(Interruptions)*... .. ...*(Time-bell)*... प्लीज़, अब आपको कंक्लूड करना पड़ेगा ...**(व्यवधान)**...

श्री अबू आसिम आज़मी : सर, मेरी बात सुन लीजिए ...**(व्यवधान)**... सर, सिर्फ एक मिनट बाकी है। ...**(व्यवधान)**... इनकी पत्नी के ...**(व्यवधान)**...

†[شری ابوعاصم اعظمی : سر، میری بات سن لیجئے .....مداخلت.... سر، صرف ایک منٹ باقی ہے ۔ .....مداخلت....]

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): इनको कंक्लूड करने दीजिए न? ...**(व्यवधान)**...

श्री अबू आसिम आज़मी : तो इन्होंने पूरा महाराष्ट्र जला डाला, गाड़ियाँ जला डालीं, तोड़ डालीं। लेकिन वहाँ पुलिस वाले कह रहे हैं कि सर, हम आपके हाथ जोड़ते हैं। होम मिनिस्टर साहब कहते हैं कि ये पुलिस वाले बेचारे मार खाने के लिए पैदा हुए हैं। अगर किसी ने भिवंडी में पत्थर मारा, तो गोली मार दे रहे हैं और ...**(व्यवधान)**... पूरे महाराष्ट्र में कुछ किया, तो उनको हाथ जोड़ रहे हैं। समाजवादी पार्टी के वर्करों के साथ इतनी ज्यादा ज्यादती हो रही है। हमारी मीटिंग नहीं होने दी है। इस तरह से हम लोगों को दबाया जा रहा है, डराया जा रहा है और जेल की सलाखों के पीछे भेजा जा रहा है ...**(व्यवधान)**...

†[شری ابوعاصم اعظمی : ان کی پتنی کے .....مداخلت.... انہوں نے پورا مہاراشٹر جلا ڈالا، گاڑیاں جلا ڈالیں، توڑ ڈالیں۔ لیکن وہاں پولیس والے کہہ رہے ہیں کہ سر، ہم آپ کے ہاتھ جوڑتے ہیں۔ ہوم منسٹر صاحب کہتے ہیں کہ یہ پولیس والے بیچارے مار کھانے کے لئے پیدا ہوئے ہیں۔ اگر کسی نے بھونڈی میں پتھر مارا، تو گولی مار دے رہے ہیں اور ...مداخلت.... پورے مہاراشٹر میں کچھ کیا، تو ان کو ہاتھ جوڑ رہے ہیں۔ سماجوادی پارٹی کے ورکروں کے ساتھ اتنی زیادہ زیادتی ہو رہی ہے۔ ہماری میٹنگ نہیں ہونے دی ہے۔ اس طرح سے ہم لوگوں کو دبایا جا رہا ہے، ڈرایا جا رہا ہے اور جیل کی سلاخوں کے پیچھے بھیجا جا رہا ہے .....مداخلت....]

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी) : आज़मी जी, प्लीज़ ...**(व्यवधान)**... अब बहुत हो गया ...**(व्यवधान)**...

श्री अबू आसिम आज़मी : इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि ...**(व्यवधान)**... इस देश की इंटरनल सेक्योरिटी को बहुत बड़ा खतरा है ...**(व्यवधान)**...

†[شری ابوعاصم اعظمی : اس لئے میں کہنا چاہتا ہوں کہ.....مداخلت....اس دیش کی انٹرنل سیکورٹی کو بہت بڑا خطرہ ہے.....مداخلت....]

†Transliteration in Urdu Script.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Shri Abani Roy, please start, otherwise, I am going to call the next speaker. ...*(Interruptions)*...

श्री अबू आसिम आज़मी : जो लोग आज सत्ता में बैठे हैं, वे उसका दुरुपयोग कर रहे हैं...**(व्यवधान)**... मुसलमानों के साथ बहुत ...**(व्यवधान)**...

شری ابوعاصم اعظمی : جولوگ آج ستہ میں بیٹھے ہیں، وہ اس کا ڈراپیوگ کررہے ہیں.....مداخلت سلمانوں کے ساتھ بہت.....مداخلت....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI) : Shri Abani Roy, please start. ...*(Interruptions)*... You have to conclude it now. ...*(Interruptions)*... Please conclude ...*(Interruptions)*...

श्री अबू आसिम आज़मी : चाहे वह ...**(व्यवधान)**... इंसान हो या जुल्म पर बोलने वाला ...**(व्यवधान)**...

شری ابوعاصم اعظمی : چاہے وہ .....مداخلت.... ، سان ہوں یا ظلم پر بولنے والا...مداخلت..

THE VICE-CHAIRMAN : Please conclude ...*(Interruptions)*... ..

श्री अबू आसिम आज़मी : तभी इस देश की इंटरनल सेक्योरिटी सही हो सकती है और आतंकवाद खत्म हो सकता है। ...**(व्यवधान)**... बहुत-बहुत शुक्रिया।

شری ابوعاصم اعظمی : تبھی اس دیش کی انٹرنل سیکورٹی صحیح ہوسکتی ہے اور آتنک واد ختم ہوسکتا ہے۔.....مداخلت.... بہت بہت شکریہ۔

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI) : Shri Abani Roy.

श्री अवनि राय (पश्चिमी बंगाल) : धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष जी। पहली बात यह है कि हम इंटरनल सेक्योरिटी पर बात कर रहे हैं। जहाँ तक सेक्योरिटी की बात है, तो पुलिस एक स्टेट-सब्जैक्ट है और स्टेट वाले इसके साथ हैं। पहले तो यह तय कर लें कि क्या हम लोग यहाँ इंटरनल सेक्योरिटी के बारे में जो चर्चा कर रहे हैं, यह इसकी चर्चा करने की जगह है या नहीं। अगर इसमें सेंट्रल गवर्नमेंट के कुछ हिस्सा लेने वाली बात है, पूरे देश वालों की बात है, देश की रक्षा की बात है, अंदर की रक्षा की बात है, तो सेंटर का भी एक रोल होता है। मेरे ख्याल में सब चीजें स्टेट पर छोड़ देना ठीक नहीं होता है। भले ही वह स्टेट में हो और जब स्टेट के अन्दर भी होते हैं, तो सेंटर से भी बात होती है। चाहे वह

†Transliteration in Urdu Script.

टेरोरिस्ट जो बाहर से आते हैं, उनकी बात हो। देश के अन्दर भी कुछ ऐसा है कि जहाँ पर यह आतंक पैदा किया जा रहा है, भले ही कोई संस्था हो या न हो, तो अगर पूरी चीज पर हम ध्यान न दें, तो यहाँ पर केवल बहस करने से क्या होगा? यहाँ पर बहस तो बहुत बार हो चुकी है, लेकिन जो ठोस कदम उठाने वाली बात है, इसमें स्टेट और सेंटर मिल कर कुछ कदम उठाएँ, ऐसी बात उठ कर नहीं आ रही है कि इसका समाधान किया जाए, इसको हल किया जाए। बात चाहे आसाम की हो, नॉर्थ ईस्ट की हो, कश्मीर की हो, मुम्बई ब्लास्ट की हो या हमारे कूच बिहार के पास हुए ब्लास्ट की हो, कहीं की भी हो, यह हमेशा बढ़ती जा रही है। हम इसके बाद सिर्फ इसे ISI के साथ जोड़ देते हैं या बांग्लादेश के साथ जोड़ देते हैं या किसी दूसरे के साथ जोड़ देते हैं या वे भाग जाते हैं या वह मिलता ही नहीं है। हमारा कहना यह है कि अगर इंटरनल सेक्योरिटी पर हम ठीक ढंग से नजर न रखें, किसी के साथ, मतलब स्टेट के साथ भी जोड़ लें, अगर हम इसके ऊपर ठोस कदम न उठाएँ, ठोस निर्णय न लें, तो हमारे यहाँ भले ही जितने सत्र होंगे, जितने सैशंस होंगे, हर सैशन में हम इंटरनल सेक्योरिटी पर यह बात करते जाएँगे, लेकिन इससे कुछ फायदा नहीं होगा।

आज देश के सामने एक बड़ा जोरदार खतरा पैदा हो गया है। आतंक बहुत बढ़ता जा रहा है, पब्लिक लाइफ दिनों-दिन गुंडे, बदमाश, खूनी आदि से भरती जा रही है। यह भी एक आतंक है। न हम इसको सम्भाल पा रहे हैं, न उसको सम्भाल पा रहे हैं, जो बाहर से आ रहे हैं और न ही उसको खत्म कर पा रहे हैं, जो अन्दर ही से, कहीं-न-कहीं से उठ कर आ रहे हैं। इस प्रकार ऐसा करके हम अपने देश की इंटरनल सेक्योरिटी पर बहस तो कर सकते हैं, लेकिन इसका हल या समाधान नहीं कर सकते हैं। इसीलिए मैं गृह मंत्री जी से यह दरखास्त करूंगा कि सही मायने में इंटरनल सिक्योरिटी को लेकर, चाहे गुंडागर्दी हो या कुछ भी ऐसा हो, जिससे हमारे देश की आम जनता की सुरक्षा की बात जुड़ी हो या देश की सुरक्षा की बात जुड़ी हो, देश की सुरक्षा के साथ-साथ आम जनता की सुरक्षा की भी बात होती है, यह सुरक्षा उनको मिलनी चाहिए। अगर इसमें कहीं कोई कमी रह जाएगी, तो मेरे ख्याल से यही हल्ला चलता रहेगा और जैसी आशंका की जा रही है कि आतंकवादियों से या आतंकवाद से लोग घबरा जाएंगे। इसलिए इस पर कहीं न कहीं रोक लगाने के लिए गृह मंत्री जी, आप सोचें और अगर इस बारे में कोई सख्त से सख्त निर्णय लेने की बात हो, तो आप स्टेट्स के साथ, कोई भी स्टेट हो, सब के साथ बैठकर बातचीत करें। ऐसा न हो कि आप यह कहते रहें कि उलफा के लोग जो हैं, वे नहीं आ रहे हैं, हमसे नहीं मिल रहे हैं, gate is open. दरवाजा खुला है, तो आ भी सकते हैं, जा भी सकते हैं, लेकिन हमें उलफा हो या सलफा हो, कोई भी हो, अगर किसी को रोकना है, तो पूरे देश भर के लिए कड़े निर्णय लेकर, सिद्धांत लेकर इनको रोकने का प्रयास करना चाहिए, खाली यह चर्चा से कुछ नहीं होगा।

सर, मैं माननीय गृह मंत्री जी से यह आग्रह करूंगा कि पूरे देश के राज्यों के गृह-मंत्रियों को लेकर और गृह मंत्रालयों को लेकर बात होनी चाहिए। यहां कहीं न कहीं हमारा नुक्स है, क्योंकि खाली मंत्रियों से बात नहीं बनती, जो अहम रोल अदा करते हैं, वे पुलिस वाले हैं, गृह मंत्रालय के लोग हैं, इसलिए पूरे मंत्रालय के अधिकारियों को लेकर इस मामले को इस ढंग से निपटाया जाए, इस ढंग से निर्णय लिया जाए कि यह देश की सुरक्षा का मामला है और इस देश की सुरक्षा हम करेंगे, इस देश की सुरक्षा हम सुनिश्चित रखेंगे, इसके लिए हम उचित निर्णय लेंगे। थैंक यू।

SHRI MOINUL HASSAN (West Bengal): Sir, I rise to take part in an important discussion which started yesterday. Sir, yesterday when this debate started, one book — Status Paper on Internal Security Situation — was supplied to us. I have had an opportunity today to go through the book. As far as terrorism and national security are concerned, it is a fact that in some spheres, there are some remarkable improvements so far. It is a fact that in the allocation of funds, there is some increase. As far as confidence-building measures are concerned, some positive steps have been taken. Dialogue is opening in different parts of the country. As far as the Ministry of Home Affairs is concerned, some positive steps regarding our internal security and national security have been taken on behalf of the Government of India. When we say that one death of civilian or one death of our jawan is a big concern to us, we must accept this position that the situation is not so good, as light as the bindings of this book. I would like to say it, Sir.

Everybody talked about Jammu and Kashmir and the North-Eastern Region. I am not going into the details of Jammu and Kashmir and the North-Eastern Region, because it has already been dealt with in a big way. But some incidents are happening in Jammu and Kashmir, the North-Eastern Region, and Mumbai. I would like to state before this august House that very recently in Jalpaiguri, which is a remote place in West Bengal, at Belacoba station, a blast took place in a train compartment.

[MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair]

Ten people were killed and intelligence report was not there. *Prima facie* report has shown that three terrorist groups are very much involved in this incident. It is not only in Jammu and Kashmir and the North-Eastern Region, but terrorist groups are also working throughout the country, and we are not able to trace them properly in proper time. So, not only our

civilians but our beloved jawans also are killed at the hands of terrorists. This is our concern. We should protect them.

Sir, another thing which I would like to bring on record is this. Honourable Home Minister, I am not quoting from the newspapers. I am quoting just two figures, not in detail. In 2000, fatalities in terrorist violence, excluding left wing extremist violence including civilians, security force personnel and terrorists, were 5839 and in November, 2006, it is reduced to 1876. I am told that very positive steps have been taken in the last two and a half years; but, on the other side, I would like to say as far as the fatalities in left wing extremist violence are concerned, it has increased a little bit. In 2002, it was 482 and in 2005, it was 669. It has increased a little bit. It is our concern.

Another aspect of this internal security is, left wing terrorism. I heard the debate initiated by Mr. Arun Jaitely and my friend Mr. Abhishek also took part. I am not going into the details as to which portion of the country is now captured by left wing terrorists. I am not talking about that. But, as far as my information goes, I would like to say that nearly 156 districts are hit by left wing terrorism. I would say, Sir, it is very dangerous. Mr. Abhishek raised that point yesterday also, that is, we are talking about districts, but, we should find out how many villages have been captured. I would like to supplement his point in this way. Among these 156 districts, nearly 50 districts are highly affected; 18 districts are moderately affected; 58 districts are marginally affected; and 30 districts are targeted. These 156 districts are spread over in thirteen States of our country. This is a great concern so far as individuals are concerned, so far as the political parties are concerned and especially my party, the Communist Party of India (Marxists) is concerned. Sir, why am I speaking like this? Why is it happening throughout the country? Sir, with your indulgence, I would like to quote just one para:

"Extremism is not merely a law and order issue. This we recognize. Development, or rather the lack of it, often has a critical bearing, as do exploitation and iniquitous socio-political circumstances. Inadequate employment opportunities, lack of access to resources, under-developed agriculture, artificially depressed wages, geographical isolation, lack of effective land reforms may all impinge significantly on the growth of extremism."

It is not from anywhere, I am quoting from the speech of the Prime Minister in the Chief Ministers' Conference on Internal Security and Law

and Order, 2005. So, I would like to know from the hon. Home Minister as to what action is taken on the points cited in the lecture of the Prime Minister. How was it translated into action to resolve extremism in this light? I would like to ask that.

I would like to inform here it is very much related. It is about Tripura. What is happening in Tripura? Cross-border terrorism is there. There is an attempt on behalf of the Ministry. Fencing is there. But the fencing is not being completed in Tripura today. One hundred and twenty miles are now left. All the people are coming from Bangladesh. When incidents take place, they go off to Bangladesh again. My proposal is, repeated dialogue should be started from the Government of India with the Governments of the States. I would like to say that it is not merely a question of law and order. Nobody is denying that the Government of India has a great role to improve the situation so far as national security of the country is concerned.

Sir, another point is that the Naxalites, the left-wing terrorists and the Maoists are using more sophisticated weapons. But our jawans, our security people have never seen them. I have an experience. Sir, just for one minute I would like to narrate it. There was a meeting held in West Bengal in the Writers Building. I was invited. It was also discussed as far as the security is concerned. High-level security personnel were also there. The DG of West Bengal has told us that we are now very well equipped because we have already given good mobile phones to our officers; they can rapidly contact our Head Office about the activities of the terrorists, the movement of the terrorists and such other persons. But I have just told them that mobile phones are in the hand of our beloved officers, but more sophisticated mobile phones than theirs are with the terrorists. So, who will win? One day, we will say like this that they have got more sophisticated weapons than ours. So, we must improve the infrastructure facilities that are provided to our jawans, to our security people, to those who are in a position to save the national security of our country.

Sir, another point which I would like to make here is that technological upliftment has taken place, and crimes are also taking place. There is a cyber age going on. At this point of time, we must try our best to adequately improve our infrastructure facilities.

Sir, I would like to mention here another important point. What is happening today in the society? Crimes against the weaker sections,

especially the women, are taking place in every nook and corner of the country. People are feeling isolated. Isolation among the people of various communities is taking place throughout the country, in different parts of the country. So, who will solve this problem of isolation? If we are not in a position to solve the problem of isolation, Sir, terrorism will grow further. Isolation not in geography, not in economy, but isolation in mentalities is taking place throughout the country. So, we are facing this problem every day. We should try to remove the feelings of isolation among the people.

Sir, one point is being very well discussed; I am not going into the details. With your permission, Sir, I am saying this. Mr. Manohar Joshi is not here; he was the Chief Minister of a State; he was also the Speaker of our beloved Lok Sabha. He has told us like this—I do not know what he wanted to say; actually I have failed to understand his version— Sir, you were in the Chair at that time—when he said—I beg your pardon, Sir,— that so far as these incidents are happening, so far as terrorism is happening, let the people decide about those who are in terrorist groups. He has segregated one community. Those who belong to a particular religion may be poor people, they may be big people or they may be middle-class people. What is happening in the country, Sir, is a fact. What is happening in the august House is for you to decide. But it is a fact that we, the Indians, are very proud of living in this beloved country. All the communities, all the people, the 110- crore Indians are very much in favour of protecting the sovereignty of our country. So, why is this type of blame being made? Why are this type of speeches going on? Another point, Sir, is....*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now.

SHRI MOINUL HASSAN: I am concluding, Sir.

Sir, about Mohammed Afzal Guru, what is happening? Everybody is talking about Afzal Guru. But somebody said, "Why are you waiting for the hon. President's opinion? Why is he not hanged?" He may be hanged or may not be. I don't know. I am not a lawyer like Mr. Ram Jethmalani. I am not a lawyer at all. I am a small fry; I am a political worker of this country. I may belong to the CPM or something else; but I am a common man. Is it possible to hang me when there is article 72 which exists in our Constitution? I have every right to send a mercy petition. I might have murdered three or four or five persons. But am I not entitled to send a mercy petition to the hon. President, to His Excellency? Till he comes to a conclusion on the question of clemency, nothing will happen. With a

heavy heart I say that, in the meanwhile, we unnecessarily bring the hon. President into the discussion. My point is this. Afzal Guru is not the point. The point is that everybody should follow the normal procedure, the Constitution and the laws which are framed by this august House. Everybody, from the President to a normal representative of the country, should abide by the Constitution of this country. This is the Afzal Guru's case. Somebody said, "Why is he not hanged now since the attack on this august House was conspired by him?". It is not the only case. I have got a copy of the official record. I would like to mention two more cases among the pending mercy petitions. They are the cases of Devendra Pal Singh of Delhi and Simon, Ghanaprakash, Madiah, and Bilavendra of Karnataka which related to mass murder by causing explosion. They are also pending. Twenty-two mercy petitions are pending, not Afzal Guru's alone. I am not trying to dilute the case of Afzal Guru. Nobody will do that. But there is a normal procedure, so far as our country is concerned. I am very much concerned about the internal security and the national security of our country. But I would like to say that proper action should be taken. Nobody should be spared, as far as national security is concerned. With these words, I conclude. Thank you.

SHRI SYED AZEEZ PASHA (Andhra Pradesh): Thank you Mr. Deputy Chairman, Sir, for giving me this opportunity to participate in the discussion on this most important subject. There are various serious issues of internal security like the problem of Naxalism, insurgency in the North-Eastern region, extremist violence and communal strife and disharmony. To begin with, I want to recall our Prime Minister Manmohan Singh's statement. He said that 165 districts covering 13 States were affected by Naxalism. This is the single biggest internal security challenge to the country. To overcome this challenge, what are the steps being taken by the Government? The Common Minimum Programme has clearly indicated that the growth of extremist violence is not merely a law and order problem, but a deep socio-economic issue which has to be addressed more seriously. This was indicated in the Common Minimum Programme. So, when we talk about deep socio-economic issues, what are the steps being taken by the Government to overcome this socio-economic problem? In my view, implementation of radical land reform is one of the important issues. I want to say clearly that the Government is only paying lip service and it is not implementing any radical land reforms, even though lakhs of acres of Government land are lying vacant, and lack of land is one of the important issues for several lakhs of agricultural workers. Second

is the problem of tribals who are getting exploited since independence of our country. Even though we are nearing 60 years of our Independence, we are still not in a position to come out with a comprehensive legislation. I am surprised that when the Joint Select Committee has unanimously recommended certain steps, why isn't the Government having guts to put it forth before both the Houses of Parliament to get it passed? Several lakhs of Tribals are waiting for the passage of this Bill. But the Government is reluctant to get this Bill passed. They don't have a decent living; they don't have the right over the forestland. Once this Bill is passed, they will get a decent living and they will have a right over the forestland and they will also get job opportunities. These are some of the issues which have to be tackled. Unfortunately, the Government of Chhattisgarh has adopted a different tactic by organising 'Selva Judum'. They are motivating or provoking one Tribal against the other by arming them and by creating a situation of killing each other. The Government of Chhattisgarh is diverting the funds of the National Rural Employment Guarantee Scheme for this purpose. This is not a correct step. This is not a solution to the problem of Naxalism in Chhattisgarh and othe parts of the country.

Now coming to the communal situation. The demolition of the Babri Masjid and then the genocide in Gujarat have created a sense of insecurity among the minority community, which is the second biggest minority community in the world. You cannot say that democracy is progressing when the second biggest minority community is feeling insecure. In this connection, the other day, a delegation from Malegaon came to meet several leaders of various political parties. They are demanding only one simple thing that let the Government order a CBI inquiry against the culprits. I don't know what hurdle or problem is the Government facing to order a CBI inquiry. The law and order problem may be the problem of the State Government, but the Central Government can always intervene. I appeal to the hon. Home Minister who is sitting here to see that a CBI inquiry is ordered into this matter so that all the facts and figures can come before the public and the culprits are punished severely.

Lastly, I heard the discussion of representatives of various political parties. One of the serious concerns expressed by some of our friends was that by repealing POTA, the security of the country has been put at peril. I don't think that this oppressive legislation was going to check the problem of extremist violence or any other thing. If it is true, then in spite of having POTA, how was this sacred House of Parliament attacked; how

was the Akshardham temple attacked and why couldn't the extremist violence be contained in the Kashmir Valley? Sir, I want to conclude by saying that POTA is not the panacea. It is only oppressive legislation. Hence it is the determined will of the Government which is going to control or give proper internal security.

MS. PRAMILA BOHIDAR (Orissa): Sir, thank you for providing me this opportunity to participate in the discussion on such a grave matter. In the past also, we discussed about internal security after various incidents of violence in different parts of the country. The Government had assured about tackling the situation. Still violence is continuing unabated in many ways in many areas. The persons, involved in the 1993 Mumbai serial bomb blasts, are being sentenced after a period of 13 years. This means that those who are involved in disturbing internal security, by causing death and destruction, are not being tried speedily. It is, therefore, necessary to set up fast-track courts to punish the guilty so that our people have faith and confidence in our legal system.

The internal security of our country is disturbed by external forces as well as by internal disorder and disharmony and regional imbalances. Lack of opportunity of livelihood causes frustration among young people. They get easily misguided and go out of the mainstream. Internal security is related to food security, provision of health and education services, creation of employment opportunities, improvement of communication system, increase in economic activities, etc.

Due to historical and political reasons, the tribal dominated areas in Orissa and its neighbouring States have not developed even after 60 years of independence. The KBK districts of Orissa remain the most backward in the country. Therefore, these districts have the largest concentration of armed extremist groups.

Keeping the need to support security system in view, the Human Rights Commission, in the proceedings before the Apex Court, has suggested continuing the revised long-term action plan.

I would, therefore, suggest that foremost priority should be given to strengthen security forces deployed to counter terrorists' nefarious designs. While the intelligence network should be equipped with all necessary infrastructural facilities including information technology, equal focus should be on promoting economic activities and addressing other social developmental issues in the areas which are Naxalite and Maoist activi-

ties-prone. The Centre should ensure that financial constraints do not come in the way of building up a strong and viable security network, and no discrimination is done in any manner whatsoever between the States, as maintaining internal security is not restricted to one State alone, but is a national priority.

DR. FAROOQ ABDULLAH : Thank you, Sir, for giving me this time.

National security is of vital importance. I am not here to play politics between the party-in-power and the party not in power. I would like to clear my statement first on Afzal Guru. A lot has been written about it and we would continue to say a lot about this. I would like to say very clearly that as far as judgment of the Supreme Court goes, I made that very clear that those judges made that judgment and they were within their power to make that judgment. I also want to make one thing very clear, what has already been made clear by the learned lawyer here, that from the very start of his trial, he did not get the right lawyers to defend him. What was made of my statement in the television that the 'nation will go up in flames'; it was not because I wanted to frighten the nation. I wanted to tell them what we were going through in our State and what effect it would have, as it was in the case of Maqbool Butt when he was hanged after 19 years in jail. For nineteen years, he was in jail and the sentence of death was passed on him! It was only when Mhatre was killed in Birmingham that they decided to hang him. Then also I had requested Mrs. Gandhi, at that stage, "Please, do not make this case for that person", but nobody listened. We are still paying the price of hanging Maqbool Butt to this day. There are people who went across, got trained and came back. And we have now a centre opened by them yesterday in downtown Srinagar in his name. The judge who passed that sentence, with all the security that was provided to him, was eliminated. That is why I said this, not to frighten our judiciary, but to tell the Government of the day, "Please take care". Otherwise, if the judges are eliminated, they will be afraid to pass sentences which are necessary for them to do.

श्री उपसभापति : अभी इतनी देर से बैठे थे, अभी गए हैं। यहां पर और मिनिस्टर हैं। ...(व्यवधान)...

DR. FAROOQ ABDULLAH: They will be coming, I am sure

श्री उपसभापति : वे भी आ रहे हैं। मिस्टर अहलुवालिया, कंटीन्युसली बैठे हैं। ...(व्यवधान)... लोक सभा में भी इसी के ऊपर बहस चल रही है।

DR. FAROOQ ABDULLAH: The two Ministers are here. It is good enough for them to be here because one of them is a Kashmiri. It is not a bad idea for him to listen to what Farooq Abdullah has to say.

DR. MURLI MANOHAR JOSHI (Uttar Pradesh): But this is the practice that the Minister concerned with the subject should make himself available...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He was here till... ...*(Interruptions)*...

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: I understand, Sir, but... ...*(Interruptions)*... साहब, मैं बाहर से ही देख रहा था, ऐसा नहीं है, लेकिन मैं कह रहा हूं कि उसके बावजूद भी ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He had just gone. ...*(Interruptions)*...

डा. मुरली मनोहर जोशी : वे तो हैं, लेकिन जवाब तो उन्हें ही देना होगा।

श्री उपसभापति : जवाब तो वे ही देंगे।

डा. मुरली मनोहर जोशी : जवाब वे देंगे तो वे सुनें। फारूक साहब बहुत महत्वपूर्ण बात कह रहे हैं। वे पुराने चीफ मिनिस्टर हैं।

श्री उपसभापति : जो वह कर रहे हैं, वह सब रिकार्ड में जाएगा, सब नोट हो रहा है, वह सब जाएगा, यह तो होगा ही। आप भी मिनिस्टर रह चुके हैं और ऐसा हुआ है।

डा. मुरली मनोहर जोशी : लेकिन कभी ऐसा नहीं करना चाहिए।

श्री उपसभापति : वे आ गए हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He was sitting here for such a long time.

DR. FAROOQ ABDULLAH: I would just repeat what I said so that the hon. Minister would hear what I have to say.

Sir, one of the most important things I wanted to clarify was on Afzal Guru, because a lot was made of it; and many of them burnt my images wherever they could because they said that I, probably, was anti-national. It is nothing new. Once, I was also called a Pakistani, a Khalistani, even an anti-national person. So, there is nothing that is new for Farooq Abdullah to accept, or, to be given these great trophies.

But, the tragedy of it was that they did not understand my sentiments behind it. We paid the price of Maqbool Butt's hanging — which we are

still paying. Now on Afzal Guru, I made it very clear in that television channel also that as far as we are concerned, the Supreme Court gave its verdict. Fine. He went then for the mercy petition. What I tell this House on this side as well as on that side is, let us understand that the mercy petition is now with the Government, with the President, and whatever the President decides, we will accept. But my warning at that time to the Government was necessary because we have paid the price of the judge who passed that sentence on Maqbool Butt and we could not save him with all the security that we gave him. That is why at that stage I said, "For God's sake, protect these judges who have passed the sentences because they may be under similar threats". It was not a threat to the judiciary. I never went that far to say that I am threatening the judiciary. It was only to awaken the Government and to say, "Please take care so that in future judges will not feel threatened", because if you eliminate one judge, others will be afraid for their life and may not pass sentences which will be necessary to be passed.

So also, I want to go away from this Afzal Guru's point now to the second most important point. Sir, it is a very nice book on internal security. But, I would like the hon. Minister and those of you who have this book to look at page 12. It says of the workings groups. And, out of this, the most important working group is on strengthening relations between the State and the Centre. The next sentence is, all of these working groups have been constituted by the State Government and deliberations are in progress. I would like to inform the hon. Home Minister that this important group on the strengthening of relations between the State and the Centre is not in operation. First, you had one judge, Mr. Abidi. Then, you had the man who was our Ambassador in America, Mr. Abid Hussain. He also did not work. Now, you have a third judge, and still there is no work going on on this most important group. Therefore, I would like to suggest to this House that if this very thing which has been put in this book is not correct, I wonder whether the other items that have been put in this book are anywhere near the truth. I am just telling you frankly, Sir. This is a wonderful book. But, if this one paragraph can give us this thing that it is on the wrong side, I wonder whether the other paragraphs have any standing at all.

Now, I would also like to bring to your notice one more thing. Sir, I have no doubt that there is definite decline in militancy. There is no doubt about it. Whatever one may say, but please remember one thing. The militants you have now got are far more trained than the ones that were before, and

they were only trained for two weeks, and they were back in the State to fight. Today, they are using much more sophisticated methods and much more sophisticated machinery to fight. At the same time, Sir, if militancy has declined, which the Home Minister says so, then, why not, remove para-military forces and your Central Reserve Forces from the towns and increase the force of police? Sir, in Punjab — those who are from Punjab here can vouch for this - the Punjab battle was won by the Punjab Police. When you strengthened them, they were the ones who succeeded in seeing that militancy went off. I think, Sir, the time has come, with militancy down, conditions getting better, let us trust Jammu and Kashmir Police, raise 35 battalions. When they are raised, then, gradually, over a period of time, start taking the para-military forces out. I do not say, 'reduce your border force'. Your border force is necessary, whether it is the Army, whether it is the BSF that you have to put. The borders have to be strengthened, that must be kept up. But, give Jammu and Kashmir Police more chances to fight militancy because they will be the ones who will fight because they know the language, they know the people. Sir, I would like to tell you that when I was the Chief Minister, I used to go to the Unified Command meetings. It was the Army bosses themselves who said to me that 'as Jammu and Kashmir Police has taken more responsibilities, we find that we are gaining ground'. And, that goes to the credit of that police force, Sir, that has done so much in getting to better situation in that place.

Sir, at the same time, I would like to say about one of the most important factors that is creating militancy. The tragedy, Sir, which we must understand is, sometimes we make one mistake, and we pay very heavily for it. It is my own police that I will tell you about. Sir, if you remember, and those in the Government must be remembering that one day, there was an incident near Anantnag.

Before that, there was an incident that five people were picked up from the shops declared as terrorists. No whereabouts were known. These villagers were coming down to Anantnag to demonstrate against their disappearance. They passed through army pickets. No army picket touched them. They were only saying that what they wanted was justice. They were not saying 'Pakistan Zindabad', they were not saying 'Azadi', but they were saying, "We want justice." They came to this area just before Anantnag starts. There, the orders from the District Commissioner was to stop them from coming to the town. The police force, whoever they were, opened fire.

Immediately I flew from Jammu to that spot. Surprisingly, Sir, these people were saying that marchers were coming from 'This way', and they showed me the door on 'This side', of 90 degrees, bullet marks! I asked them, "Have we produced bullets and guns that can go at 90 degrees without any guided instrument in it?" They had fired directly at them and because they had made the mistake of doing it, they themselves fired the bullets into the doors to show that they used the weapons on us and we fired back.

I am grateful to the Government of the day and that was this Government and that was the lawyer who was speaking here, who was the Law Minister and gave me a retired judge from the South who held court and found that people who were guilty were chargesheeted. People got confidence that, yes, there is law, there is order. Unfortunately, sometimes, we make mistakes in the Government. Let us not blame Pakistan or you in the Centre or anybody in the Centre. It is we in the State at times that make mistakes and we have to pay a heavy price because people then start losing faith in the very democracy that they live in.

Sir, I was the one, when POTA was not introduced in the Centre, when it was only talked about, who put POTA in my State. Friends from that side and the ones who are not here used that with great force against Farooq Abdullah in the last elections. Why did Farooq Abdullah use POTA? Not to arrest innocent persons. It is not the law which is bad but it is the way you implement the law, that is bad. It is the way you want to implement the Constitution, like you used article 356 with impunity. Do not forget that in 1984 you dismissed my Government on flimsy ground of law and order. God knows whether you will ever be able to use such articles, which should disappear from our Constitution.

Constitution is how you implement it and that is how the law is. If you want to implement it rightly - I do not know, POTA might have created trouble like TADA did; but my intentions were for the internal security, for the nation's safety, that my people could walk with freedom, that I could walk without Black Cat. But, that same clause was used against me to defeat me in every corner by saying, "Here is this black man who has done this POTA and he is responsible for what you are going through." Pity, you would never understand the people who stand by this nation. You will understand them only when they are dead and you will put medals on their graves! I said before, I do not need your medals. I stand as a man of the nation and I shall live and die as a man of the nation.

5.00 P.M.

Therefore, I would like to tell you, Sir, that it is high time that we give the people the promise that the Prime Minister made that there will be no human rights violation. He said that there would be zero tolerance. Where is that human rights violation not being done? Even today we have that dreaded law, the Special Powers Act, under which any soldier can go and arrest anybody, can go to anybody's home, even my home, beat the hell out of me and you cannot take him to the court as was proved recently. When the courts asked for the officers to be brought to the courts, they said, we do not come under your purview. It was only at the highest level in Delhi that they were told that they had to go. Otherwise, that law is the one that is creating tragedies for us. I think it is high time you looked at it. I am glad that the Foreign Minister of India today who was the Defence Minister of India, I would like to tell him from this very seat that one of the miseries that we face is that when an army convoy moves, I wish you could see it, there is a man with a whistle in his mouth and a stick in his hand, and if you do not give him the way or you want to cross him, he will hit you there and then, and he will stop and he will take you out of the vehicle and beat the hell out of you. So, are we creating confidence by this? Are we building national security by this? Are we winning the hearts of the people that we have to win? If we do not win the hearts of the people, Sir, we will never be able to get rid of the terrorism that is going to be there for many years to come, and maybe, we will never see the end of it. If we want to win the hearts of the people, Sir, let us get on with the job that we have said we will do and stop these human right violations that take place. I do not forgive the terrorists. They are as much involved in the human rights violations. They throw a bomb. It does not kill a policeman, it does not kill a serviceman; it kills an innocent person on the road, an innocent woman or an innocent man or an innocent boy who is the bread earner of the State. There are instances, which must be looked into. I went to a place near Pakharpura where an 18 years old boy...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Doctor Sahib, the Foreign Minister has to make a statement. Later on you can continue. It was decided that he will make his statement at five o' clock.

STATEMENT BY MINISTER

Visit of Chinese President Hu Jintao to India

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI PRANAB